04 - देश की रक्षा के लिए तत्पर संघ

05 - अदम्य साहस, शौर्य, संघर्ष और देश प्रेम की प्रतिमूर्ति - रानी अवंतीबाई

A Daily News Magazine

भोपाल

गुरुवार, 15 अगस्त, 2024

06 - विश्व रिकॉर्ड में शामिल हुए बैतूल के कवि दीपक साहू

07- आजादी

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 339 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

तिरंगा रैली.....में महिला शक्ति

15 अगस्त राष्ट्रीय उत्सव हमें देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना में ओतप्रोत होने का अवसर प्रदान करता है। झीलों की नगरी भोपाल में तिरंगा रैली में महिलाओं में दिखा देशभक्ति का जज्बा।

लोकतंत्र व संविधान में भरोसा जताने का क्षण

विशेष संपादकीय

15 अगस्त

अजय बोकिल

यह होना तो नहीं चाहिए था फिर भी हो रहा है। देश के 78वें स्वतंत्रता दिवस पर हमे उन पैमानों और प्रतिबद्धताओं को फिर से याद दिलाना पड़ रहा है। न सिर्फ दिलाना पड़ रहा है बल्कि उसकी रक्षा का संकल्प भी बार-बार दोहरा रहा है। विडंबना यह है कि पक्ष प्रतिपक्ष दोनों भारतीय लोकतंत्र के आधार स्तम्भ संविधान की हर हाल में रक्षा का वचन दिए जा रहे हैं, लेकिन दोनों को ही एक दूसरे पर भरोसा नहीं है। अगर भरोसा ही नहीं है तो लोकतंत्र की विरासत भावी पीढ़ियों के लिए आगे कैसे बढ़ेगी। इस बार लोकसभा चुनाव में संविधान और उसकी रक्षा तथा प्रकारांतर से देश में लोकतांत्रिक मूल्यों एवं संवैधानिक संस्थाओं के क्षरण को बचाने का मुद्दा हावी रहा। हालांकि आम लोगों की नजरों में संविधान का मुख्य अर्थ आरक्षण ही है। प्रतिपक्ष ने सत्तारूढ़ भाजपा और उसके शीर्ष नेता नरेन्द्र मोदी की संविधान के प्रति निष्ठा और नीयत पर सवाल खड़े किए तो सत्तापक्ष भाजपा ने सवाल उठाने वाली कांग्रेस के असंवैधानिक कृत्यों का कच्चा चिट्ठा खोल दिया। आशय यही था कि विपक्ष भाजपा पर सवाल करने के पहले अपने गिरेबान में झांके। लेकिन बात यहीं तक सीमित नहीं है। लोकतंत्र को बचाए रखने के प्रति हमारी बुनियादी प्रतिबद्धता की है। बीते 77 सालों में एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र के रूप में जो स्वयं अपने आप में अत्यधिक विविधताओं से भरा है, एक लोकतंत्र के रूप में मजबूती से कायम रहना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। एक आपातकाल के 19 माह को छोड़ दिया जाए तो सरकारें भले बदलती रही हों, लेकिन लोकतंत्र पर कोई आंच नहीं आई। इसके विपरीत हम हमारे साथ या उसके बाद स्वतंत्र हुए देशों की हालत देखें तो हमे हमारी इस उपलब्धि पर गर्व होना चाहिए। हमे इसके लिए अपने उन दूरदर्शी पूर्वजों का भी आभारी होना चाहिए, जिन्होंने यह जान लिया था कि भारत अगर एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में जीवित और समृद्ध रहना चाहता है तो उसे लोकतंत्र को कही अपनाना होगा। बहुदलीय लोकतंत्र अब हमारे खून में रम चुका है। ऐसे में यहां कोई बंदूक के दम पर तख्ता पलट कर दे, यह नामुमकिन है। बेशक भारत में विविधताओं के साथ कई अंतर्विरोध भी हैं, लेकिन उन पर लोकतांत्रिक तरीके से ही पार पाया जा सकता है। यह हमने बीते सात दशकों में देखा और महसूसा है। इसमें संदेह नहीं कि राजनीतिक दलों की अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता होती है और शासन संचालन के तरीकों में अंतर होता है। लेकिन कोई भी दल यह नहीं चाहता कि भारत की सत्ता इसकी ताकतवर सेना के हाथ चली जाए। खुद सेना भी ऐसा नहीं चाहती। उसे अपनी हदें मालूम हैं। इसके बाद भी विपक्ष को शक है कि सत्ता पक्ष येन केन प्रकारेण देश में तानाशाही शासन स्थापित करना चाहता है, जबकि सत्ता पक्ष ने इसका हमेशा खंडन किया है। हमे हमारी संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली में पूरा भरोसा है। देश की यह राष्ट्रीय पंचायत ही देश के भावनाओं का साकार रूप है। इसे कोई बदल नहीं सकता, फिर भी आजादी की इस वर्षगांठ पर संकल्प लें कि कोई इसे बदलने की सोचे भी नहीं।

सुप्रभात

जय-जय भारतवर्ष प्रणाम!
युग-युग के आदर्श प्रणाम!
शत्-शत् बंधन टूटे आज
बैरी के प्रभु रूठे आज
अंधकार है भाग रहा
जाग रहा है तरुण विहान!
जय जाग्रत भारत संतान
जय उन्नत जनता सज्ञान
जय मज़दूर, जयति किसान!
वीर शहीदों तुम्हें प्रणाम!
धूल भरी इन राहों पर
पीड़ित जन की आहों पर
किए उन्होंने अर्पित प्राण
वीर शहीदों तुम्हें प्रणाम!
जब तक जीवन मुक्त न हो
क्रंदन-बंधन मुक्त न हो
जब तक दुनिया बदल न जाए
सुखी शांत संयुक्त न हो—
देशभक्त मतवालों के,
हम सब हिम्मत वालों के,
आगे बढ़ते चलें क़दम,
पर्वत चढ़ते चलें क़दम!

- शंकर शैलेन्द्र

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर 15 अगस्त को 'सुबह सवेरे' कार्यालय में अवकाश रहेगा। अखबार का अगला अंक 17 अगस्त को प्रकाशित होगा। सभी पाठकों को स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। सं.

शान से लहराएगा तिरंगा

आज आजादी की धूम

पीएम मोदी लगातार 11वीं बार लालकिले की प्राचीर पर फहराएंगे तिरंगा

हर्षोल्लास के साथ मनेगा आजादी का पर्व, 'विकसित भारत' की है थीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत कल 15 अगस्त को अपना 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है, इसे लेकर पूरे देश में तैयारियां शुरू पूरी कर ली गई हैं। हर घर तिरंगा यात्रा शुरू कर दी गई है, जगह-जगह हाथ में ध्वज लेकर लोग सड़कों पर निकल चुके हैं। तस्वीरें आ रही हैं जहां पर सबसे लंबी कतारें बनाने का रिकॉर्ड बनाने की होड़ लगी हुई है। हर कोई बस तिरंगे की शान में यात्रा निकाल रहा है। केंद्र सरकार के तमाम बड़े मंत्री और खुद पीएम मोदी ने भी एक्स प्लेटफॉर्म पर अपनी डीपी चेंज कर ली है, सभी ने तिरंगा लगा इस आंदोलन को आगे बढ़ाने की कवायद की है।

पंचायत प्रतिनिधि से लेकर लखपति दीदी तक 400 महिलाएं बढ़ाएंगी शान

लाल किले पर आयोजित होने वाले 78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में देशभर से 400 महिला पंचायत प्रतिनिधियों को विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया है। पंचायती राज मंत्रालय ने मंगलवार को एक बयान जारी कर यह जानकारी दी है। बयान में कहा गया है कि पंचायती राज संस्थाओं की लगभग 400 महिला प्रतिनिधियों को 78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष अतिथि के रूप में लाल किले पर आमंत्रित किया गया है। इनके अलावा लखपति दीदियों और ड्रोन दीदियों को भी इस समारोह में आमंत्रित किया गया है। ग्रामीण विकास मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार, स्वतंत्रता दिवस समारोह में शामिल होने के लिए करीब 45 लखपति दीदियों और करीब 30 ड्रोन दीदियों को भी विशेष अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया है। बुधवार को ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उन्हें सम्मानित भी किया।

स्वतंत्रता दिवस से पहले दिल्ली, पंजाब में फिदायीन हमले का खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली और पंजाब में स्वतंत्रता दिवस के आसपास आतंकी हमले की आशंका है। खुफिया एजेंसियों को जम्मू में सक्रिय एक आतंकी समूह के एक या दो आतंकियों की तरफ से फिदायीन हमले की साजिश की जानकारी मिली है। 15 अगस्त को सुरक्षा बलों की भारी तैनाती के कारण आतंकी उसके एक या दो दिन बाद फिदायीन हमले की साजिश रच रहे हैं। खुफिया सूत्रों के हवाले से बताया है कि जम्मू-कश्मीर के कठुआ से सटे एक गांव में हाल ही में हथियारों के साथ दो अज्ञात लोगों की आवाजाही देखी गई थी।

घाटी में फिर हुआ आतंकी हमला, एक कैप्टन शहीद

- 4 आतंकियों के भी मारे जाने की खबर, आर्मी चीफ ने की बैठक

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के डोडा में बुधवार को सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ में आर्मी कैप्टन शहीद हो गए। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, एनकाउंटर में 4 आतंकियों की भी मारे जाने की खबर है। सेना के मुताबिक, शहीद कैप्टन दीपक सिंह 48 राष्ट्रीय राइफल से हैं। वह डोडा में असार फॉरेस्ट एरिया में चल रहे एनकाउंटर में टीम को लीड कर रहे थे। 16 जुलाई को भी डोडा के डेसा इलाके में मुठभेड़ के दौरान एक कैप्टन समेत 5 जवान शहीद हुए थे। सेना के मुताबिक, एनकाउंटर अभी जारी है। आतंकी जंगल में एक नदी के पास छिपकर फायरिंग कर रहे हैं। सुबह वे फायरिंग के दौरान पीछे भाग गए थे। वहां से जवानों को अमेरिकी एम-4 राइफल और तीन बैग में विस्फोटक मिला है। जम्मू-कश्मीर में बढ़ती आतंकी घटनाओं को लेकर दिल्ली में रक्षा मंत्री ने मीटिंग बुलाई। इसमें एनएसए अजीत डोभाल, आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी और अन्य सुरक्षा एजेंसियों के प्रमुख शामिल हुए।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत

भोपाल में 30 किमी लंबी तिरंगा यात्रा निकली

कोलार में सीएम डॉ. मोहन यादव ने दिखाई हरी झंडी, खुली जीप में निकले

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार रोड स्थित मदर टेरेसा स्कूल से संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) तक करीब 30 किलोमीटर लंबी तिरंगा यात्रा निकली। खुली जीप, कार-जीप और मोटरसाइकिलों पर सैकड़ों लोग हाथों में तिरंगा थामे निकले। सुबह साढ़े 11 बजे सीएम डॉ. मोहन यादव ने यात्रा को हरी झंडी दिखाई। वे यात्रा में भी शामिल रहे। करीब 7 किलोमीटर वे खुली जीप में विधायक रामेश्वर शर्मा के साथ हाथों में तिरंगा थामे रहे। यात्रा के चलते ट्रैफिक व्यवस्था बदली रही।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हर घर तिरंगा अभियान के तहत अखंड भारत संकल्प के साथ कर्मश्री संस्था के अध्यक्ष एवं विधायक शर्मा के नेतृत्व में ये तिरंगा यात्रा निकाली गई। रास्ते में करीब 500 स्वागत मंच सजे।जहां से तिरंगा यात्रा का स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने यात्रा को संबोधित करते हुए कहा कि तिरंगा हमारी आन बान शान का प्रतीक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर घर तिरंगा अभियान के माध्यम से पूरे देश को देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना में ओतप्रोत होने का अवसर प्रदान किया है। तिरंगे में विद्यमान चक्र देश की गति को दर्शाता है, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हमने देश को विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था में शामिल किया है।

देश की शक्ति और विशेष कर युवा सामर्थ्य के माध्यम से हम जल्द ही विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था होंगे। स्वतंत्रता दिवस का महत्व हमारे सभी प्रमुख त्योहार होली दिवाली से अधिक है, अतः हर घर में तिरंगा लहराना चाहिए।

सवा 2 घंटे में पहुंची यात्रा- तिरंगा यात्रा के चलते ट्रैफिक रूट डायवर्ट किया गया था। यह यात्रा मदर टेरेसा स्कूल से शुरू हुई, जो सेमरी जोड़, गेहूंखेड़ा, बीमाकुंज, मंदाकिनी चौराहा, सर्व-धर्म ब्रिज, चूना भट्टी चौराहा, कोलार रेस्ट हाउस, मैनिट चौराहा, माता मंदिर, अटल पथ, रोशनपुरा चौराहा, पॉलीटेक्निक चौराहा, कमला पार्क, वीआईपी रोड, खानूगांव चौराहा, लालघाटी चौराहा, हलालपुर बस स्टैंड, चंचल चौराहा, कालिका चौराहा होते हुए बैरागढ़ से आगे भैंसाखेड़ी कृषि उपज मंडी पहुंची।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5 °c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 15 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

आईएमएफ की मुहर, सच होगी पीएम मोदी की भविष्यवाणी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल में कहा था कि उनके तीसरे कार्यकाल में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी इकॉनमी बन जाएगा।

मोदी का यह कार्यकाल 2029 तक चलेगा। आईएमएफ के मुताबिक 2029 तक भारत दुनिया की तीसरी बड़ी इकॉनमी बन जाएगा। भारत अभी पांचवें नंबर पर है। उससे आगे अमेरिका, चीन, जर्मनी और जापान हैं लेकिन 2029 तक भारत यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी जर्मनी और जापान को पछाड़कर तीसरे नंबर पर पहुंच जाएगा। तब भारत की जीडीपी का साइज 6.44 ट्रिलियन डॉलर होगा। जर्मनी 5.36 ट्रिलियन डॉलर के साथ चौथे पर खिसक जाएगा जबकि जापान 4.94 ट्रिलियन डॉलर के साथ पांचवें नंबर पर होगा।

आम जनता को महंगाई से जल्द मिलेगी राहत

● जुलाई में थोक महंगाई घटकर 2.04 फीसदी पर आई ● रोजाना की जरूरत वाले सामानों के कम हो गए दाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। जुलाई में थोक महंगाई घटकर 2.04 फीसदी पर आ गई है। जून में ये बढ़कर 3.36 फीसदी पर पहुंच गई थी, जो महंगाई का 16 महीनों का ऊपरी स्तर था। वहीं, मई में थोक महंगाई 2.61 फीसदी पर थी। 14 अगस्त को जुलाई महीने के थोक महंगाई के आंकड़े जारी किए गए। इससे पहले 12 अगस्त को रिटेल महंगाई के आंकड़े जारी किए गए थे। जुलाई महीने में रिटेल महंगाई घटकर 3.54 फीसदी पर आ गई है। ये 59 महीने का निचला स्तर है। अगस्त 2019 में महंगाई 3.21 फीसदी थी। खाने-पीने की चीजों के दाम घटने से महंगाई घटी थी। थोक महंगाई के लंबे समय तक बढ़े रहने से ज्यादातर प्रोडक्टिव सेक्टर पर इसका बुरा असर पड़ता है। अगर थोक मूल्य बहुत ज्यादा समय तक ऊंचे स्तर पर रहता है, तो प्रोड्यूसर इसका बोझ कंज्यूमर्स पर डाल देते हैं। सरकार केवल टैक्स के जरिए आरबीआई को कंट्रोल कर सकती है। जैसे कच्चे तेल में तेज बढ़ोतरी की स्थिति में सरकार ने ईंधन पर एक्साइज ड्यूटी कटौती की थी। हालांकि,

सरकार टैक्स कटौती एक सीमा में ही कम कर सकती है। आरबीआई में ज्यादा वेटेज मेटल, केमिकल, प्लास्टिक, रबर जैसे फैक्ट्री से जुड़े सामानों का होता है।

भारत में दो तरह की महंगाई होती है। एक रिटेल, यानी खुदरा और दूसरी थोक महंगाई होती है। रिटेल महंगाई दर आम ग्राहकों की तरफ से दी जाने वाली कीमतों पर आधारित होती है। इसको कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स भी कहते हैं। वहीं, होलसेल प्राइस इंडेक्स का अर्थ उन कीमतों से होता है, जो थोक बाजार में एक कारोबारी दूसरे कारोबारी से वसूलता है। महंगाई मापने के लिए अलग-अलग आइटम्स को शामिल किया जाता है। जैसे थोक महंगाई में मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्ट्स की हिस्सेदारी 63.75 फीसदी, प्राइमरी आर्टिकल जैसे फूड 22.62 फीसदी और फ्यूल एंड पावर 13.15 फीसदी होती है।

संक्षिप्त समाचार

राहुल गांधी ने कोलकाता रेप और मर्डर केस में तोड़ी चुप्पी

● उन्नाव और हाथरस का भी किया जिक्र, कहा-आरोपियों को बचा रहा अस्पताल

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कोलकाता के एक अस्पताल में डॉक्टर के रेप और कत्ल के मामले में चुप्पी तोड़ दी है। बीते सप्ताह हुई इस घटना पर अब तक राहुल गांधी की प्रतिक्रिया नहीं आई थी। उन्होंने बुधवार को एक्स पर लिखे एक पोस्ट में कहा कि आरोपी को बचाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ ही उन्होंने हाथरस, उन्नाव और कठुआ में हुई यौन उत्पीड़न की घटनाओं का भी जिक्र कर दिया। इस तरह इशारे में ही उन्होंने ममता बनर्जी के अलावा भाजपा शासित राज्यों की सरकारों को भी कटघरे में खड़ा करने की कोशिश की। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा, कोलकाता में जूनियर डॉक्टर के साथ हुई रेप और मर्डर की वीभत्स घटना से पूरा देश स्तब्ध है।

चीन, पाकिस्तान को पस्त करेंगे अपने 'हंटर-किलर'

● भारत ने यूएस से 31 एमक्यू-9बी खरीद के लिए तेज की सौदेबाजी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन और पाकिस्तान को काउंटर करने के लिए भारत अमेरिका से 31 एमक्यू-9 बी ड्रोन खरीदने की तैयारी कर रहा है। ये ड्रोन हंटर-किलर के नाम से जाने जाते हैं और दुश्मन पर नजर रखने और हमला करने में सक्षम हैं। यह कदम चीन और पाकिस्तान की तरफ से अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने के मद्देनजर उठाया जा रहा है। दोनों देशों ने हाल ही में अपने ड्रोन बेड़े को मजबूत किया है। भारत का लक्ष्य इस साल नवंबर-दिसंबर तक इस बड़े सौदे को अंतिम रूप देना है। दोनों देशों के बीच इस सौदे को लेकर काफी समय से बातचीत चल रही है। अब इसी साल सौदे को अंतिम रूप देने की कोशिशें तेज कर दी गई हैं। रक्षा मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि बातचीत अब एक उन्नत चरण में है। गार्जियन थल सेना और वायुसेना के लिए होंगे।

अतीक के बेटे का एनकाउंटर करने वाले पुलिसकर्मी होंगे सम्मानित

15 अगस्त को 17 पुलिसवालों को मिलेगा राष्ट्रपति पदक, 5 लाख का ईनामी था असद

प्रयागराज (एजेंसी)। माफिया अतीक अहमद के बेटे असद और शूटर मोहम्मद गुलाम का एनकाउंटर करने वाले 17 पुलिसकर्मियों को राष्ट्रपति पदक मिलेगा। 15 अगस्त को दिल्ली में सभी को सम्मानित किया जाएगा। उमेश पाल हत्याकांड के बाद असद और गुलाम फरार हो गए थे। दोनों पर 5-5 लाख रुपए का इनाम था। 13 अप्रैल, 2023 को झांसी में असद और मोहम्मद गुलाम का एनकाउंटर किया गया। इस ऑपरेशन में एसटीएफ के 6 और पुलिस के 11 जवान शामिल थे। इसे यूपी एसटीएफ के डिप्टी एसपी नवेंदु और विमल ने लीड किया था। 24 फरवरी 2023 को प्रयागराज में राजूपाल हत्याकांड के मुख्य गवाह उमेश पाल की हत्या कर दी गई। हत्याकांड को बीच बाजार अंजाम दिया गया। उमेश पाल जब अपने घर जा रहे थे, तभी गली के बाहर कार से निकलते वक्त उन पर फायरिंग हुई। इस दौरान बम भी

फेंके गए। उमेश पाल और उनके दो सरकारी गनर की मौके पर ही मौत हो गई। मामले का सीसीटीवी सामने आया। इसके बाद असद और गुलाम की संलिप्तता पाई गई। चिरगांव में असद और गुलाम की लोकेशन मिली थी इसके बाद यूपी पुलिस और एसटीएफ की टीम लगातार गिरफ्तारी के लिए दबिश देने लगी। दोनों पर 5-5 लाख रुपए के इनाम की घोषणा की गई। 48 दिन बाद सोर्स ने असद और गुलाम की पहली लोकेशन झांसी के चिरगांव के पास होने की जानकारी दी।

जहां मिला ट्रेनी डॉक्टर का शव वहां होने लगा रेनोवेशन

● भाजपा ने लगाया बड़ा आरोप, सबूत मिटा रही ममता सरकार

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में डॉक्टर के बलात्कार और हत्या मामले में एक नया राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। वामपंथी समूहों और भारतीय जनता पार्टी ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के अधिकारियों पर घटना से संबंधित सबूतों से छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया है। सीपीआई (एम) से जुड़े डेमोक्रेटिक यूथ फेडरेशन ऑफ इंडिया (डीवाईएफआई) और स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) ने बताया कि सेमिनार रूम के पास मरम्मत का काम शुरू हो गया है। आपको बता दें कि यहीं पर कुछ दिन पहले डॉक्टर का शव मिला था। वे अस्पताल के आपातकालीन भवन के गेट पर विरोध प्रदर्शन करने के लिए एकत्र हुए और आरोप लगाया कि अधिकारी सबूतों को नष्ट करने और असली दोषियों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

अमेरिका ने अरुण योगीराज को वीजा देने से किया इनकार

अयोध्या में राम मंदिर के लिए बनाई थी रामलला की मूर्ति

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या के राम मंदिर के लिए रामलला की मूर्ति बनाने वाले प्रसिद्ध मूर्तिकार अरुण योगीराज को अमेरिका ने वीजा देने से इनकार कर दिया है। इसके लिए अमेरिका ने कोई ठोस वजह भी नहीं बताई है। योगीराज को 12वीं अक्का वर्ल्ड कन्नड़ कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के लिए अमेरिका जाना था। यह कॉन्फ्रेंस 30 अगस्त से एक सितंबर के बीच वर्जीनिया के रिचमंड कन्वेंशन सेंटर में होनी थी। अरुण योगीराज के परिवार ने वीजा नहीं दिए जाने को लेकर निराशा जताई है।

पारिवारिक सूत्रों का कहना है कि अरुण की पत्नी विजेता पहले भी अमेरिका जा चुकी हैं और ऐसे में अरुण को वीजा देने से इनकार करना काफी अप्रत्याशित है। मूर्तिकार अरुण ने अमेरिका के लिए सभी तैयारियां भी पूरी कर ली थीं। अरुण योगीराज ने भी अमेरिका द्वारा वीजा देने से इनकार किए जाने की पुष्टि की। उन्होंने कहा कि मुझे कोई वजह नहीं मालूम, लेकिन हमने वीजा संबंधित सभी डॉक्यूमेंट्स को जमा कर दिया था। बता दें कि अक्का वर्ल्ड कन्नड़ कॉन्फ्रेंस को सालभर में दो बार आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अमेरिका समेत दुनिया के अन्य हिस्सों में रहने वाले समुदाय के सदस्यों को एक जगह लाना है। इस साल की शुरुआत में अयोध्या में बन रहे राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

पटरी से उतरी मालगाड़ी...कोयले से भरे 5 डिब्बे पलटे

सागर-कटनी रूट पर आवागमन पूरी तरह बंद; 3 ट्रेनें रद्द

दमोह (नप्र)। दमोह जिले के पथरिया के पास कटनी से सागर जा रही कोयले से भरी एक मालगाड़ी पटरी से उतर गई। बुधवार शाम करीब 6.30 बजे 5 डिब्बे ट्रैक पर ही पलट गए। रेल पटरियां उखड़ चुकी हैं। इसके चलते सागर, दमोह, कटनी रूट पूरी तरह से बाधित हो गया है। इस रूट से गुजरने वाली 3 ट्रेनें रद्द की गई हैं, वहीं 8 को डायवर्टेड रूट से चलाया जा रहा है।

हालांकि, जमीन धंसने के कारण हादसे की आशंका जताई जा रही है। जिले में लगातार बारिश हो रही है। वहीं, रेलवे के अधिकारियों की टीम मौके पर है। ट्रैक पर आवागमन बहाली का काम तेजी से किया जा रहा है। मालगाड़ी के डिब्बे पलटने के 5 मिनट बाद ही दरभंगा एक्सप्रेस पहुंची, जिसे रोक दिया गया।

गैंगरेप के बाद हत्या, ब्रेस्ट भी काटे, प्राइवेट पार्ट पर चाकू मारा

● मुजफ्फरपुर में मां-पिता के सामने छात्रा को उठाया, कहा-तुम्हारी बेटी के साथ रेप करेंगे

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार के मुजफ्फरपुर में 9वीं क्लास की छात्रा की गैंगरेप के बाद हत्या कर दी गई। आरोपियों ने उसके ब्रेस्ट काट दिए। प्राइवेट पार्ट पर भी चाकू से हमला किया। सोमवार को उसका शव अर्धनग्न हालत में पोखर में मिला। उसके मुंह पर कपड़ा बंधा था। अगल-बगल मांस के

चिथड़े और खून के धब्बे पड़े थे। पीड़ित छात्रा के परिवार का कहना है कि रविवार की रात 5 लोग घर से बेटी को उठाकर ले गए। उन्होंने कहा कि तुम्हारी बेटी के साथ रेप करेंगे। छात्रा की मां ने थाने में लिखित शिकायत की है। प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। जिसमें गांव के ही संजय राय (41) समेत पांच अज्ञात को आरोपी बनाया है। एफआईआर में मां ने बताया कि रविवार की रात मेरे पति और बेटा घर के बाहर सोए थे। घर के अंदर मैं, छोटी बेटी और मेरी एक विधवा बेटी सोई थी।

कोलकाता रेप-मर्डर केस, स्टूडेंट्स का सबूतों से छेड़छाड़ का आरोप

कहा-घटनास्थल से 20 मीटर दूर पुलिस के सामने हो रही तोड़फोड़

नई दिल्ली (एजेंसी)। ट्रेनी डॉक्टर रेप-मर्डर केस में अस्पताल प्रशासन पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। मेडिकल कॉलेज के स्टूडेंट ने आरोप लगाया है कि अस्पताल प्रशासन सबूतों से छेड़छाड़ कर रहा है। उन्होंने वीडियो शेयर कर कहा- सेमिनार हॉल से 20 मीटर की दूरी पर चेस्ट डिपार्टमेंट के ऑफिस में तोड़फोड़ हो रही है। पुलिस के सामने रिनोवेशन के नाम पर सबूतों से छेड़छाड़ हो रही है। दरअसल, 9 अगस्त को इसी सेमिनार हॉल में ट्रेनी डॉक्टर की अर्धनग्न बॉडी मिली थी। डॉक्टर के प्राइवेट पार्ट, आंखों और मुंह से खून बह रहा था। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में रेप के बाद मर्डर की बात कही गई। कलकत्ता हाईकोर्ट ने केस की जांच सीबीआई को सौंपी। बुधवार सुबह आरोपी संजय को

सीबीआई ने कस्टडी में लिया। डॉक्टर्स की सुरक्षा के लिए कानून की मांग को लेकर देशभर के डॉक्टर्स हड़ताल कर रहे हैं। सीबीआई ने मामले की जांच शुरू कर दी है। बुधवार सुबह कोलकाता पुलिस ने सीबीआई टीम को केस डायरी सौंपी। इसके बाद सीबीआई टीम आरोपी संजय को पूछताछ के लिए ऑफिस लेकर आई। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय बोले- हाईकोर्ट के सीबीआई जांच के आदेश का स्वागत करता हूं।

अरविंद केजरीवाल को नहीं मिली अंतरिम जमानत

सुप्रीम कोर्ट से लगा बड़ा झटका, जेल में ही रहेंगे सीएम

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बड़ा झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने उनकी अंतरिम जमानत को खारिज कर दिया है। असल में कथित शराब घोटाले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत चाहते थे, उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में इसी वजह से एक याचिका दायर की थी लेकिन सर्वोच्च अदालत का दो टूक कहना है कि जब तक दोनों ही पक्षों का ना सुन लिया जाए, किसी तरह की राहत नहीं दी जा सकती है। अब इस मामले में अगली सुनवाई 23 अगस्त होने जा रही है, तब सबसे पहले सीबीआई को ही अपना जवाब देने का मौका मिलेगा। समझने का प्रयास रहेगा कि केजरीवाल क्या सही में इस मामले में दोषी हैं या फिर उन्हें जमानत का अधिकार दे देना चाहिए। वैसे कुछ दिन पहले सुप्रीम कोर्ट ने ही मनीष सिसोदिया को जरूर बड़ी राहत देने का काम किया था। उन्हें उसी शराब घोटाले में बेल दी गई थी, यहां तक कहा गया था कि निचली अदालत ने उनकी जमानत याचिकाओं पर ठीक तरह से गौर नहीं किया। सुप्रीम कोर्ट का तब तर्क रहा था कि सिसोदिया तो सिर्फ अपनी बीमार पत्नी से मिलने के लिए जमानत चाहते थे।

अयोध्या में रामपथ-भक्तिपथ से 50 लाख की लाइटें चोरी

3800 बैम्बू लाइट और 96 प्रोजेक्टर गायब, सीसीटीवी से लैस, फोर्स रहती है तैनात

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या के रामपथ और भक्तिपथ से 50 लाख की लाइटें चोरी हो गईं। 3800 बैम्बू लाइट और 96 गोबो प्रोजेक्टर गायब मिले हैं। रामपथ और भक्तिपथ सीसीटीवी कैमरों से लैस है। 24 घंटे पुलिसकर्मियों की तैनाती रहती है। दोनों पथ राम मंदिर से जुड़े हैं। लाइटों को लगाने वाली कार्यदायी संस्था यश इंटरप्राइजेज के कर्मचारी शेखर शर्मा ने मंगलवार को रामजन्मभूमि थाने में एफआईआर दर्ज करवाई है। उन्होंने बताया- रामपथ के पेड़ों पर 6400 बैम्बू लाइट, भक्तिपथ पर 96 गोबो प्रोजेक्टर लाइटें लगाई गई थीं। 19 अप्रैल तक सभी लाइटें थीं। 19 मई को निरीक्षण किया गया। इसमें पता चला कि कुछ लाइटें कम हैं। अब तक 3800 बैम्बू लाइट और

36 गोबो प्रोजेक्टर लाइट चोरी हो चुकी हैं। थाना रामजन्मभूमि के टीआई देवेंद्र पांडेय ने बताया- मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पथों पर लगे सीसीटीवी को देखा जा रहा है। वहीं, कमिश्नर गौरव दयाल ने कहा- इतनी कड़ी सुरक्षा के बीच लाइट चोरी होना संभव नहीं है। हो सकता है कि बंदरों ने कुछ लाइटों को क्षतिग्रस्त कर दिया। रामपथ की लंबाई 13 किलोमीटर है। इसमें हाई रेजुलेशन 25 सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। इनकी क्षमती ऐसी है कि लोगों के हाथ की लकीरें तक कैप्चर कर सकते हैं। वहीं, भक्ति पथ की लंबाई 800 मीटर है। इसमें जगह-जगह 12 सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। दोनों पथों पर लगे सीसीटीवी को नए घाट पर बने कंट्रोल रूम से मॉनीटर किया जाता है। दोनों पथों पर ट्रैफिक, सिविल और एसटीएफ के करीब 1000 जवान 50-50 मीटर की दूरी पर तैनात रहते हैं।

शेख मुजीबुर्रहमान की पुण्यतिथि पर होने वाली छुट्टी भी रद्द

● अपने राष्ट्रपिता से जुड़ी हर पहचान मिटाने में लगा बांग्लादेश!

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने 15 अगस्त के राष्ट्रीय अवकाश को रद्द कर दिया है।

मंगलवार को सलाहकार परिषद की बैठक में 15 अगस्त की छुट्टी को खत्म करने की मंजूरी दी गई। 15 अगस्त देश के संस्थापक और शेख हसीना के पिता बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान की पुण्यतिथि है। उनकी 15 अगस्त, 1975 में ढाका में परिवार के साथ हत्या कर दी गई थी।

राज्यपाल पटेल से उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने सौजन्य भेंट की

सिकल सेल एनीमिया के नियंत्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों और प्रगति से अवगत कराया

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल से उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने राजभवन में सौजन्य भेंट कर सिकल सेल एनीमिया के नियंत्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों और प्रगति से अवगत कराया। उन्होंने हीमोग्लोबिनोपैथी मिशन अंतर्गत किए जा रहे कार्यों, सिकल सेल रोगियों एवं वल्नरेबल क्षेत्र के नागरिकों के बचाव एवं उपचार के प्रयासों और संचालित जागरूकता गतिविधियों की जानकारी दी। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बताया कि प्रभावित क्षेत्र का हर नागरिक सिकल सेल एनीमिया की रोकथाम के लिए सावधानियों को समझे और आत्मसात करे, इसके लिए जागरूकता और आउटकम की मॉनिटरिंग के प्रयास किए जा रहे हैं, इन प्रयासों से सिकल सेल एनीमिया को जड़ से समाप्त किया जायेगा।

उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बताया कि वर्तमान में प्रदेश के 33 ज़िलों में सिकल सेल मरीज़ों की स्क्रीनिंग का कार्य किया जा रहा है। अब तक 59 लाख से अधिक नागरिकों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, जिनमें एक लाख 34 हज़ार नागरिक सिकल सेल वाहक और 20 हज़ार 526 सिकल सेल एनीमिया के मरीज़ पाये गये हैं। 32 लाख 37 हज़ार 842 व्यक्तियों को सिकल सेल कार्ड वितरित किए जा चुके हैं। मरीजों के उपचार एवं प्रबंधन के लिए चिन्हांकित जिलों में 6 से 10 बिस्तरीय एकीकृत उपचार केंद्र स्थापित कर उपचार के साथ हाइड्रॉक्सी-यूरिया, फोलिक एसिड दवाइयों का वितरण किया जा रहा है। एकीकृत उपचार केन्द्रों में रिप्लेसमेंट फ्री एवं सुरक्षित रक्त की निःशुल्क सुविधा है। वर्ष 2024-25 में सिकल सेल मरीजों को लगभग 9 लाख 22 हज़ार 500 हाइडॉक्सी-यूरिया का वितरण एवं 3 हज़ार 37 यूनिट निःशुल्क रक्ताधान किया गया है।

देश के नवनिर्माण में अपना सर्वस्व लगाएं

मंत्री श्री सारंग ने दी स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। सहकारिता और खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने अपने संदेश में कहा है कि आजादी को चिरस्थायी बनाये रखने और देश के नवनिर्माण में अपना सर्वस्व लगायें।

मंत्री श्री सारंग ने कहा है कि सैकड़ों वर्ष की गुलामी और हजारों क्रांतिकारियों की कुर्बानी के बाद हमें यह आजादी मिली है। वह शहीद जिन्होंने आजादी के लिए अपनी शहादत दी, हमें उन सबके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए। हम स्वतंत्रता दिवस का पर्व इस संकल्प के साथ मनायें कि हम उन शहीदों की शहादत के प्रति नमन करेंगे, जिन्होंने हमें आजादी दिलाई है। इस आजादी को हम चिरस्थायी रखें, यह हम सबका कर्तव्य होना चाहिए। हम संकल्प लें कि देश की एकता-अखंडता बनायें रखने और देश को शक्तिशाली, वैभवशाली हिंदुस्तान बनाने के महायज्ञ में अपनी सार्थक आहुति देंगे। हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह देश हर स्तर पर विकास एवं कल्याण कर रहा है। विश्व के मानचित्र पर आज हिंदुस्तान एक सफल राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ है। आईए हम सब मिलकर देश के नवनिर्माण में अपना सर्वस्व लगाएं। सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

पर्यटन राज्यमंत्री श्री लोधी ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दी

भोपाल (नप्र)। पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास और धर्मस्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी ने प्रदेशवासियों को 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शुभकामनाएँ और बधाई दी है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर हम देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद हुए अमर वीरों को याद कर उनके बलिदान को नमन करते हैं। आज हम जिस आजादी का आनंद ले रहे हैं, इसे पाने के लिये हमारे स्वतंत्रता सेनानियों से अपने प्राणों की आहूति दी थी।

श्री लोधी ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हमें अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों को याद दिलाता है तथा अपने देश को और अधिक मजबूत एवं समृद्ध बनाने के लिये प्रेरित करता है। उन्होंने प्रदेशवासियों से देश और प्रदेश में भाईचारा और समरसता बनाये रखने की अपील की है।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने दी स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने प्रदेश के सभी नागरिकों को 78वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने कहा कि आज जब हम अपनी आज़ादी का एक बार फिर मिलकर जश्न मना रहे हैं, मुझे इस बात का गर्व है कि हमने अपने जनजातीय भाइयों और बहनों के उत्थान में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की है, जो हमारे राज्य की पुरातत्व सांस्कृतिक धरोहर की मूल आत्मा हैं।

मंत्री डॉ. शाह ने कहा है कि विभिन्न योजनाओं के जरिये हम अपने जनजातीय भाइयों और बहनों को स्व-रोजगार, आर्थिक उत्थान और हर जरूरी सहायता के अवसर प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने अपनी आजादी के लिये एक बड़ी कीमत चुकाई है। इसलिए अपने-अपने घरों में तिरंगा लगाकर आजादी का उत्सव मनायें और देशहित में मिलकर काम करने का संकल्प लें।

7 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट

मुरैना में कुंवारी नदी उफान पर, घरों में पानी भरा, एसडीईआरएफ की टीम पहुंची

भोपाल (नप्र)। साइक्लोनिक सर्कुलेशन और मानसून ट्रफ की एक्टिविटी होने से मध्यप्रदेश में अगले 24 घंटे में कहीं तेज, तो कहीं हल्की बारिश होगी। गुना, सागर समेत 7 जिलों

में तेज बारिश का अलर्ट है। भोपाल में सुबह से बादल छाए हैं। उधर, मुरैना में कुंवारी नदी उफान पर है। इससे अंबाह के भागीरथ का पुरा गांव में पानी भर गया। एसडीईआरएफ की टीम ने ग्रामीणों का रेस्क्यू कर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। प्रदेश में अब तक सीजन की 73 प्रतिशत बारिश ज्यादा हो गई है। अब तक 23.5 इंच बारिश होनी चाहिए, लेकिन 27.2 इंच पानी गिर चुका है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक प्रकाश दामले ने बताया, पूर्व-उत्तर राजस्थान के ऊपर साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव है। यहीं से होते हुए मानसून ट्रफ गुजर रही है। एक अन्य ट्रफ और 2 साइक्लोनिक सर्कुलेशन भी एक्टिव है। कल से सिस्टम कमजोर हो जाएंगे। अगले सिस्टम के एक्टिव होने तक प्रदेश में बूंदाबांदी और गरज-चमक की स्थिति रहेगी।

स्वतंत्रता दिवस पर 177 कैदियों को मिलेगी 'आजादी' पर इन अपराधियों को नहीं मिलेगा इसका फायदा

भोपाल (नप्र)। आज पूरे देश में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। देश को स्वतंत्रता मिलने के मौके पर प्रदेश की जेलों में रह रहे 177 कैदियों को भी आजादी मिलेगी। यह कैदी एमपी की जेलों में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। रिहा होने वाले इन 177 बंदियों में 5 महिलाएं भी शामिल हैं। प्रदेश सरकार हर साल 15 अगस्त को कुछेक कैदियों को उनके अच्छे आचरण और अन्य मापदंडों के आधार पर रिहा करती है।

दरअसल, मध्यप्रदेश शासन के जेल विभाग की रिहाई नीति-2022 के अंतर्गत कैदियों को सजा में छूट प्रदान की जाती है। यह 177 कैदी भी उसी छूट का लाभ उठाकर रिहा हो रहे हैं। अधिकारियों के अनुसार रिहा होने वाले बंदियों में दुष्कर्म, पोक्सो जैसे गंभीर मामलों में सजा काट रहे कैदियों को कोई राहत नहीं मिलती। यानी इन्हें रिहाई नीति का फायदा नहीं दिया जाता।

किन-किन जेलों से मिलेगी 'आजादी'

15 अगस्त को सतना जेल से सबसे अधिक 24 कैदी रिहा किए जा रहे हैं। जबलपुर की सेंट्रल जेल से 20 कैदियों को 'आजाद' किया जाएगा। इसके अलावा सागर और उज्जैन की जेल से 19-19, इंदौर जेल से 18, ग्वालियर जेल से 16, भोपाल व नरसिंहपुर की जेल से 15-15, रीवा जेल से 14, बड़वानी जेल से 7, नर्मदापुरम जेल से 6 और टीकमगढ़ जेल से 4 कैदी रिहा किए जा रहे हैं।

ऐसे करेंगे खुद का गुजारा

जिन कैदियों की रिहाई की जा रही है, उन्हें जेल के दौरान भवन मिस्त्री, भवन सामग्री निर्माण, टेलरिंग, कारपेन्ट्री, लौहारी आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। ताकि रिहा होने के बाद ये जीविकोपार्जन के साधन अर्जित कर सकें।

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने दी स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने कहा है कि आज का दिन हमें उन महान स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों की याद दिलाता है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें आज़ादी दिलाई। यह दिन हमारे लिए न केवल गर्व का, बल्कि अपने कर्तव्यों को निभाने का भी है।

हमारा तिरंगा हमारी राष्ट्रीय पहचान और गौरव का प्रतीक है। यह हमें एकजुटता, समर्पण, और देशप्रेम का संदेश देता है। आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपने देश की समृद्धि और विकास के लिए अथक प्रयास करेंगे और इसे दुनिया में सर्वोच्च स्थान दिलाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे।

म.प्र.के 32 पुलिस अफसर-कर्मचारियों को राष्ट्रपति अवॉर्ड

आईपीएस चंचल शेखर, अरविंद कुमार को विशिष्ट सेवा पदक, समीर और रहमान को वीरता पदक

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के 32 पुलिस कर्मचारियों और अधिकारियों को राष्ट्रपति की ओर से दिए जाने वाले गैलेंट्री अवॉर्ड (वीरता पदक), विशिष्ट सेवा पदक (डिस्टिंग्विश सर्विस अवार्ड) और सराहनीय सेवा पदक (मेरिटोरियस सर्विस अवॉर्ड) के लिए चुना है। इन्हें अगले साल 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर पदक से सम्मानित किया जाएगा। सम्मान पाने वालों में एडीजी चंचल शेखर, आईजी अरविंद सक्सेना और राजेश हिंगणकर, डीआईजी पंकज श्रीवास्तव, राजेश सिंह, विनीत कपूर के अलावा पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारी समीर सौरभ, मोती उर रहमान और इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर, हेड कॉन्स्टेबल शामिल हैं।

एमपी से गैलेंट्री अवॉर्ड के लिए 12, विशिष्ट सेवा पदक के लिए 4 और सराहनीय सेवा पदक के लिए 14 अधिकारी कर्मचारी चुने गए हैं। इसके अलावा होमगार्ड कैटेगरी में भी दो सैनिकों को अवॉर्ड के लिए चुना गया है।

मुख्यमंत्री ने दी पदक के लिए चयनित अफसरों, कर्मचारियों को बधाई

अवॉर्ड के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुलिस अफसरों को बधाई दी है। भोपाल के कोलार इलाके में तिरंगा यात्रा में शामिल होने पहुंचे सीएम यादव ने कहा कि प्रदेश के इतिहास में इस साल जितने पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को वीरता पदक, विशिष्ट सेवा पदक और सराहनीय सेवा पदक मिले हैं, इसके पहले कभी इतने नहीं मिले। यह पुलिस के साथ सरकार के लिए भी गर्व की बात है।

एमपी के इन 12 अफसरों को मिला गैलेंट्री अवॉर्ड

मो. अयूब खान सब इंस्पेक्टर
आशीष शर्मा सब इंस्पेक्टर
हनुमत टेकाम हेड कांस्टेबल
समीर सौरभ आईपीएस (पुलिस अधीक्षक)
मोती उर रहमान आईपीएस (कमांडेंट)
आशीष शर्मा इंस्पेक्टर
मोहनलाल मरावी सब इंस्पेक्टर
राजेश धुर्वे एएसआई
नामदेव शर्मा सब इंस्पेक्टर
अरुण मिश्रा एएसआई
अतुल कुमार शुक्ला एएसआई
पुनीत गहलोद आईपीएस

राष्ट्रपति की ओर से विशिष्ट सेवा पदक

चंचल शेखर एडीजी
अरविंद कुमार सक्सेना आईजी
राजेश हिंगणकर आईजी
रामधर भारद्वाज एसपी

मेरिटोरियस अवॉर्ड

संजय कुमार दुबे डीएसपी
पंकज श्रीवास्तव डीआईजी
राजेश सिंह डीआईजी
विनीत कपूर डीआईजी
अंजना तिवारी डिप्टी कमांडेंट
योगेश्वर शर्मा एसपी
महावीर सिंह मुजाल्दे एएसपी
इरमीन शाह एएसपी
सुरेश कुमार बजंघाटे इंस्पेक्टर
मानवेंद्र सिंह कुशवाह डीएसपी
रवि कुमार द्विवेदी डीएसपी
प्रवीण नारायण बघेल डीएसपी
सुरेंद्र सिंह सिकरवार डीएसपी
शैलेंद्र सिंह राजपूत सब इंस्पेक्टर

होमगार्ड एंड सिविल डिफेंस

मोहनलाल शर्मा सैनिक (वालंटियर)
श्याम सिंह राजपूत सैनिक (वालंटियर)

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने प्रदेशवासियों को दी स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दी है। उन्होंने कहा है कि स्वतंत्रता दिवस हमें उन महान स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों की याद दिलाता है, जिन्होंने आजादी के लिए प्राणों की आहुति दी। यह दिन हमारे लिए गर्व के साथ ही अपने कर्तव्यों को निभाने का भी है।

भोपाल एम्स के 600 रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल

नर्सिंग स्टॉफ ने मोर्चा संभाला; ओपीडी, ड्रेसिंग-माइनर ऑपरेशन कर रहे

भोपाल (नप्र)। भोपाल एम्स के 600 से अधिक रेजिडेंट डॉक्टर आज भी हड़ताल पर हैं। वे कोलकाता की महिला डॉक्टर से दुष्कर्म और फिर मर्डर के आरोपियों को सख्त सजा दिए जाने की मांग कर रहे हैं। उनके हड़ताल पर जाने से व्यवस्थाएं न बिगड़े, इसलिए नर्सिंग स्टॉफ ने मोर्चा संभाला है। नर्सिंग स्टॉफ की ओपीडी, ड्रेसिंग और माइनर ऑपरेशन कर रहा है। हमीदिया अस्पताल में डॉक्टर एवं अन्य स्टाफ काली पट्टी बांधकर काम कर रहे हैं।

बुधवार को भी रजिडेंट डॉक्टरों ने एम्स कैम्पस में रैली निकाल कर विरोध जताया। कोलकाता स्थित आरजी कार मेडिकल कॉलेज में लेडी डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई थी। ऐसे जघन्य अपराध के खिलाफ और पीड़िता के परिजनों को न्यास दिलाने के लिए रेजिडेंट डॉक्टर यह विरोध कर रहे हैं। उनकी हड़ताल तो एम्स भोपाल नर्सेस एसोसिएशन ने समर्थन किया है, लेकिन वे मरीजों का इलाज भी कर रहे हैं।

सीनियर डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टॉफ के जिम्मे पूरी व्यवस्था

एम्स के करीब 600 रेजिडेंस यानी जूनियर डॉक्टर्स हड़ताल पर है। ऐसे में मरीजों के इलाज की व्यवस्था न बिगड़े, इसलिए सीनियर्स डॉक्टर्स ने व्यवस्था संभाल रखी है। एम्स के पीआरओ केडी शुक्ला ने बताया, एम्स के जूनियर डॉक्टर्स हड़ताल पर हैं, लेकिन सीनियर्स डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टॉफ के जिम्मे पूरी व्यवस्था है। डॉक्टर्स की संख्या करीब 200 और नर्सिंग स्टॉफ करीब 500 है। फिलहाल किसी प्रकार की दिक्कत नहीं हो रही है।

शाम 7 बजे तक डटी रही नर्सेस

एम्स भोपाल में रेजिडेंट डॉक्टर मंगलवार को हड़ताल पर चले गए थे। इसके चलते नर्सिंग स्टॉफ ने मोर्चा संभाला और ओपीडी, ड्रेसिंग रूम और माइनर ऑपरेशन थिएटरों में अकेले ही मरीजों का इलाज किया। ताकि, मरीजों को परेशानी न हो। कुछ जगह तो नर्सिंग स्टॉफ शाम 5 बजे ड्यूटी खत्म होने के बाद भी 7 बजे तक मरीजों को देखता रहा।

म.प्र.की हर आंगनबाड़ी में होगा स्थायी मोबाइल नंबर

एक लाख मोबाइल सिम बांटेगा महिला बाल विकास विभाग

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की 97 हजार आंगनबाड़ियों में महिला और बाल विकास विभाग एक-एक मोबाइल सिम देने की तैयारी में है। इसके लिए 21 अगस्त तक ऑफर बुलाए गए थे। जिसकी तारीख अब बढ़ाकर अब 30 अगस्त तक कर दी है।

ये सिम 1 लाख एक हजार 191 कार्यकर्ताओं और सुपरवाइजर को दी जाएगी, जो स्थायी तौर पर आंगनबाड़ी में पदस्थ कार्यकर्ता के पास रहेगी। कार्यकर्ता के हटने या रिटायर होने पर भी यह नंबर नहीं बदलेगा, और हमेशा चालू रहेगा।

अभी अपनी सिम चला रही हैं कार्यकर्ता- आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को चार साल पहले मोबाइल दिए गए थे। जिसमें अब तक वे अपना सिम चला रही थीं। अब इन मोबाइल में सरकार की ओर से दिए जाने वाले सिम उपयोग होंगे। इसके लिए ही यह व्यवस्था लागू की जा रही है ताकि हर आंगनबाड़ी केंद्र का स्थायी नंबर रहे।

बताया जाता है कि प्रदेश में मौजूदा मोबाइल नेट वर्किंग सिस्टम को ध्यान में रखते हुए विभाग प्रदेश के सभी चारों मोबाइल सर्विस प्रोवाइडर के ऑफर स्वीकार कर सकता है ताकि किसी की मोनोपोली न हो और महिला व बाल

विकास विभाग का काम प्रभावित न हो। जिस कंपनी की मोबाइल नेटवर्क जिस इलाके में बेहतर होगा, उससे उस इलाके में मोबाइल सिम लिए जाएंगे।

तीन माह में दिए जाते हैं 500 रुपए- केंद्र सरकारी की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों में तैनात कार्यकर्ताओं को चार साल पहले दिए गए मोबाइल बदलने का काम भी धीरे-धीरे किया जाएगा, क्योंकि इसकी अवधि यही तय की गई है।

सरकार की ओर से अब तक 500 रुपए तीन महीने में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के खाते में सिम रिचार्ज करने दिए जा रहे हैं। यह हर माह औसत 160 रुपए होता है। अब मोबाइल सिम देने के साथ क्या व्यवस्था तय होगी? इसको लेकर अभी शासन स्तर पर फैसला किया जाएगा।

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

लोकेन्द्र सिंह

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

देश की रक्षा के लिए तत्पर संघ

सर्वोच्च न्यायालय से सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति केटी थॉमस के इस कथन के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के स्वयंसेवकों की देशभक्ति एवं बलिदान की कथाएं हैं। जब हम इतिहास के पृष्ठ पलटते हैं तो संघर्ष के समय में आरएसएस के कार्यकर्ता साहस के साथ मोर्चा लिए खड़े दिखाई देते हैं। स्वतंत्रता के बाद जब पहली बार पाकिस्तान ने आक्रमण किया तब, 1962 में चीन ने पीठ में छुरा घोंपा तब और उसके बाद भी जब देश पर शत्रु ने हमला किया तब, प्रत्येक अवसर पर संघ के स्वयंसेवकों ने यथासंभव देश की सुरक्षा में अपना योगदान दिया। गोवा मुक्ति आंदोलन में तो संघ ने अग्रणी

कोई पूछता है कि देश के लोग सुरक्षित क्यों हैं? तो मैं कहना चाहूँगा कि यहाँ संविधान है, लोकतंत्र है, सेना है और किस्मत से आरएसएस है।

- न्यायमूर्ति केटी थॉमस

भूमिका का निर्वहन किया। इस आंदोलन में उज्जैन, मध्यप्रदेश के ही एक स्वयंसेवक राजाभाऊ महाकाल ने तिरंगे की शान में सीने पर गोली खाई थी। युद्ध ही क्यों, संघ के स्वयंसेवक शेष समय में भी आंतरिक सुरक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत आरएसएस के समविचारी संगठन अपने निहित कार्यों को संपादित करने के साथ-साथ समाज का इस प्रकार प्रबोधन करते हैं कि वहाँ अराजकतावादी ताकतें पनप नहीं पाती हैं।

देश की सुरक्षा के लिए संघ के स्वयंसेवक सदैव तत्पर और सजग रहते हैं। बाहरी दुश्मनों से निपटने के लिए देश की सीमा पर अदम्य साहसी भारतीय सेना खड़ी है। किंतु, विदेशी ताकतें भारत को भीतर से भी तोड़ने के लिए षड्यंत्र रचती रहती हैं। ऐसे में सेना जैसा अनुशासन रखने वाले सजग नागरिकों की आवश्यकता रहती है, जो आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में देश के सुरक्षा बलों के अप्रत्यक्ष रूप से सहायक सिद्ध हो सकें। संघ के स्वयंसेवक शाखा में ऐसा ही अनुशासन और सजगता सीखते हैं। स्वयंसेवकों के इसी अनुशासन को आधार बना कर सरसंघचालक

डॉ. मोहन भागवत ने कहा था कि संघ के स्वयंसेवक तीन दिन में सेना के लिए तैयार हो सकते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सरकार और समाज दोनों को ही समय-समय पर बाहरी और भीतरी हमले के संबंध में चेताता रहा है। देश की आंतरिक सुरक्षा संघ की प्राथमिकता में शामिल है। इसलिए संघ की शीर्ष बैठकों में आंतरिक सुरक्षा के विषय पर निरंतर चर्चा होती रहती है। मुम्बई बम धमाकों (वर्ष 1993) के बाद तो संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल ने बाकायदा 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरे' शीर्षक से एक प्रस्ताव पारित किया था। अपने इस प्रस्ताव में संघ ने देश की आंतरिक सुरक्षा के प्रति चिंता जताई, उसे और अधिक मजबूत करने की माँग सहित पाँच प्रमुख आग्रह सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए। इसके बाद 1994 में 'आंतरिक सुरक्षा' और 1995 में 'आंतरिक परिस्थिति' शीर्षक से प्रस्ताव पारित किया था। वर्ष 1995 के अपने प्रस्ताव में संघ ने स्वयंसेवकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि राष्ट्रीय एकता और अपने सांस्कृतिक मूल्यों का बोध जगाकर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत एकात्म समाज को खड़ा करने के कार्य को और भी अधिक गतिमान और बलवान बनाने के लिए पूरी शक्ति से जुट जाएं। संघ ने राष्ट्रीय सुरक्षा-1996, राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनौती-2001, आंतरिक सुरक्षा के समक्ष चुनौतियां-2004, आतंकवाद और भारत की आंतरिक सुरक्षा-2006 प्रस्ताव पारित कर भी आंतरिक सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता एवं चिंता को प्रकट किया। इसके साथ ही अन्य प्रस्तावों में भी कहीं न कहीं संघ के नीति निर्माता समूह ने आंतरिक सुरक्षा को मुद्दे को सम्मिलित किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सिर्फ आंतरिक सुरक्षा पर चिंता ही व्यक्त नहीं करता है, अपितु उसके स्वयंसेवक सदैव देश की सुरक्षा के लिए चौकन्ने रहते हैं। जिन क्षेत्रों में संघ का कार्य प्रभावी ढंग से चलता है, वहाँ समाज जाग्रत रहता है। उन क्षेत्रों में ऐसी स्थिति कतई नहीं रहती कि लोगों को अपने पड़ोस की भी जानकारी न हो। बल्कि, उन क्षेत्रों में लोगों का आपस में आत्मीय संपर्क एवं संवाद रहता है। इस कारण वहाँ समाज के बीच कोई भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि छिप नहीं सकती। संघ का मानना है कि देश की अखण्डता के लिए आवश्यक है कि देश भीतर से भी मजबूत हो। देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित हो और यह सब संभव है, समाज के जाग्रत एवं संगठित रहने से। इसलिए संघ का जो समाज संगठन का कार्य है, वह भी आंतरिक सुरक्षा में अप्रत्यक्ष रूप से सहायक सिद्ध होता है।

नेहरू जी की नजर में हमारा झंडा : संविधान सभा का भाषण

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

एल.एस. हरदेनिया

हमारे देश का झंडा कैसा हो, उस झंडे के पीछे कौनसा विचार है, उसका इतिहास क्या है, इस पर संविधान सभा में लंबी बहस हुई थी। बहस की शुरूआत पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की थी। नेहरू जी ने इस संबंध में एक प्रस्ताव पेश किया था।

अपने भाषण की शुरूआत करते हुए उन्होंने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस संबंध में प्रस्ताव पेश करने को कहा गया है। प्रस्ताव इस प्रकार था-कि हमारे देश के झंडे का स्वरूप क्या होगा? इसमें कौनसे रंग डाले जायेंगे। यह हमें तय करना है। इस संबंध में उन्होंने विस्तृत प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव पर चर्चा प्रारंभ करते हुए उन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव बहुत ही सादा है। इसमें न तो कोई चमक है और ना ही कोई अन्य गर्माहट है। परंतु मुझे पूरा विश्वास है कि इस संदर्भ में लोगों की क्या भावना होगी। परंतु मैं जानता हूँ कि इस झंडे का एक इतिहास है। कभी-कभी यह लगता है कि इसके पीछे सदियों का इतिहास है। इस झंडे के पीछे इतिहास की अनेक करवटें हैं, विशेषकर पिछले 25 साल की। अनेक स्मृतियाँ मुझे झकझोर रही हैं। मैं और इस सदन में अनेक लोग यह महसूस करेंगे कि हमने इस झंडे को किस गर्व से और किस उत्साह से देखा। उसकी आवाजें आज भी हमारे कानों में सुनाई पड़ रही हैं। यह झंडा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस सदन में ऐसे अनेक लोग हैं जो झंडे को अंत तक सम्हाले रहे। इस झंडे को सम्हालने वाले ऐसे अनेक लोग हैं जो हमारे बीच में अब नहीं रहे। जो इसे अंत तक सम्हाले रहे हैं और जो इसे सम्हाले हुए मौत से भी नहीं डरे। सच पूछा जाए तो इस झंडे का संघर्ष का इतिहास है। जिस संघर्ष के माध्यम से हम आज़ादी की कामना करते रहे और आज भी कर रहे हैं। इस झंडे को जब हम हाथ में लेते हैं तो हमें एक प्रकार की विजय महसूस होती है।

इस तरह मैं यह प्रस्ताव पेश कर रहा हूँ। मैं इस प्रस्ताव से इस झंडे की परिभाषा रख रहा हूँ और वह परिभाषा क्या होनी चाहिए यह भी बता रहा हूँ। यह झंडा हमें बड़े से बड़ा बलिदान करने की प्रेरणा देता है। वैसे हम सब ने इस झंडे को तरह-तरह के दृष्टिकोण से देखा है। परंतु मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि जब हमने इस झंडे का स्वरूप तय किया था तब वह हमें बहुत ही सुंदर लगा था। वैसे तो हर झंडा सुंदर होना चाहिए परंतु जब वह किसी देश की चेतना का प्रतीक होता है तो उसका सुंदर होना लाजमी है।

इस झंडे के आसपास अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई हैं जिन्हें हम सदा याद करेंगे। इन घटनाओं के याद आते ही हम दुखी हो जाते हैं। यह झंडा हमें अंतिम मंजिल पाने की प्रेरणा देता है। शायद हम अपनी अंतिम मंजिल उस रूप में पैदा न कर पाएं जिसकी हमने परिकल्पना की थी परंतु हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम बहुत कम उन सपनों को साकार कर पाते हैं जो हमने देखे हैं। इस संदर्भ में हमें बहुत उदाहरण याद रहते हैं। कुछ सालों पहले एक बड़ा युद्ध लड़ा गया था। उस युद्ध ने मानवता पर अनेक संकट लादे थे। कुछ राष्ट्र उस युद्ध के माध्यम से आज़ादी और लोकतंत्र हासिल करना चाहते थे। कुछ ने उस युद्ध के दौरान अपनी आज़ादी भी खोई और लोकतंत्र को भी खोया। उस युद्ध में ऐसे लोगों ने सफलता पाई जो आजादी और प्रजातंत्र के हामी थे। परंतु कुछ समय बाद फिर दूसरा युद्ध चालू हो गया, जिसने फिर अनेक मुसीबतें मानवता पर लादीं। आज़ादी दुनिया के अनेक राष्ट्रों के लिए अभी भी दूर की मंजिल है। हम भी ऐसे ही राष्ट्रों में से हैं जिनके लिए आज भी आज़ादी दूर की मंजिल है। इसमें शर्म करने की जरूरत नहीं है क्योंकि अभी तक हमने जो हासिल किया है वह कम भी नहीं है। इसलिए ऐसे समय में यह उचित होगा कि जो कुछ हमने हासिल किया है उसके प्रतीक के रूप में हम इस झंडे को स्वीकार करें।

ऐसे अवसर पर हमें सोचना चाहिए कि आखिर आज़ादी क्या है? आज़ादी के लिए संघर्ष करने का अर्थ क्या है? मेरी मान्यता है कि आज़ादी उस समय तक जरूरी है जब हमारे देश में एक भी इंसान ऐसा हो जो अपने को आज़ाद अनुभव नहीं कर रहा हो। हमारे देश में तो क्या अगर दुनिया में भी अगर ऐसा इंसान है जिसे भूख का सामना कर पड़ रहा हो, जिसे अपना शरीर ढंकने के लिए यथेष्ट कपड़े नहीं हों, जो इंसान की जीवन की कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को प्राप्त नहीं कर पा रहा हो, जिसके लिए प्रगति के दरवाजे अभी भी बंद हैं। यदि ऐसी स्थिति है तो उसे मैं आज़ादी नहीं मानूंगा। मैं सही आज़ादी उसे मानूंगा जब हमारी आने वाली पीढ़ियां ऐसा समाज हासिल कर सकें जिसमें वह सब प्राप्त हो जाए जिसका वर्णन मैंने किया है। या जिन्हें इस तरह की स्थितियाँ प्राप्त करने में कठिनाई महसूस न हो। वैसे मैं जानता हूँ कि जो कुछ हम चाहते हैं उसे पूर्ण रूप से हासिल करना संभव नहीं है। परंतु हमें ऐसे अवसर बना देना चाहिए जिसमें वह सब प्राप्त कर सकें जिसे आज़ादी कहते हैं और जिसे लोकतंत्र कहते हैं।

हम एक ऐसे झंडे की कल्पना कर रहे हैं जो एक हद तक इंसान की महत्वाकांक्षा का प्रतिनिधित्व कर सके। इसलिए मैं सोचता हूं कि हमने जिस झंडे की कल्पना की है वह हमें वह सब हासिल करने की प्रेरणा देता है जो उसके जीवन को सुखद बनाता है। इंसान सिर्फ भौतिक चीजों से सुखी और संतुष्ट नहीं होता है। यद्यपि उनको हासिल करना भी महत्वपूर्ण है।

कोई भी राष्ट्र-हमारा राष्ट्र मिलाकर, जो भौतिक चीजों के साथ-साथ उन चीजों को भी हासिल करना चाहता है जो उसे आत्मिक सुख देता है। हम सदियों से इस तरह की चीजों को हासिल किए हुए हैं। हमने भले ही भौतिक चीजे हासिल न की हों, हम भले ही अत्यधिक दुखी वातावरण में रहे हों परंतु ऐसी स्थिति में भी हमने अपने सिर को ऊँचा रखा है और हमने अपने आदर्शों और उसूलों को बचाकर रखा है। हम जो यहां पर एकत्रित हुए हैं वे एक संक्रमण काल से गुजर कर एकत्रित हुए हैं और हम इस संक्रमण को महसूस भी कर रहे हैं। हम इस संक्रमण को सुखद भविष्य के रूप में परिवर्तित भी कर रहे हैं।

जैसा कि मैंने अपने भाषण के प्रारंभ में कहा था कि यह मेरा सुखद अधिकार है कि मुझे यह प्रस्ताव पेश करने का अवसर दिया गया है। मैं अब कुछ बातें इस झंडे के बारे में भी कहना चाहूंगा। इस झंडे और उस झंडे में जिसे हम पिछले कई वर्षों से लहराते रहे हैं थोड़ा अंतर है। वैसे इस झंडे के रंग भी वही हैं जो पहले झंडे में थे। पहले झंडे में चरखा था, जो आम आदमी के श्रम का प्रतीक था। जो हमें महात्मा गाँधी के आदेश से प्राप्त हुआ था। इस झंडे में थोड़ा अंतर किया गया है। इस झंडे में चरखे के स्थान पर अब एक चक्र रखा गया है।

इस तरह हमने चरखे को पूरी तरह नहीं नकारा है। चरखे में चक्र होता था जिसे हमने इस झंडे में भी रखा है। परंतु किस तरह के चक्र को हमने रखा है? हमारे दिमाग में अनेक चक्र थे परंतु जो चक्र हमने रखा है वह हमें सम्राट अशोक की याद दिलाता है। उस अशोक का जिसका हमारे देश के इतिहास में अतिमहत्वपूर्ण स्थान है। न सिर्फहमारे इतिहास में वरन् दुनिया के इतिहास में भी। आज के समय में दुनिया आपसी बैर, आपसी लड़ाई, असहिष्णुता के दौर के गुजर रही है। हमारी स्मृति भारत के उस काल की तरफजाती है जब हम कुछ महत्वपूर्ण आदर्शों के प्रति समर्पित थे। शायद इन्हीं आदर्शों और सिद्धांतों के कारण हमारा देश और उसकी सभ्यता आज भी जीवित है। यदि हम उन आदर्शों में विश्वास नहीं रखते तो हमारा भारत कभी का मर जाता। हम उन आदर्शों को नये वातावरण में भी जिंदा रख सकें। इन्हीं के कारण हम दुनिया के देशों से अपना संबंध बनाए रखे हैं। इन्हीं के कारण भारत दुनिया का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा। इन्हीं के कारण हम अपने सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों को दुनिया के कौने-कौने में भेजते रहे। यही हमारी ताकत रही है। इसके साथ ही हम दुनिया के अच्छे उसूलों को अपनाते रहे।

इसलिए मैंने अशोक के नाम का उल्लेख किया। सच पूछा जाए तो सम्राट अशोक का काल भारतीय इतिहास का एक महानतम काल था। यह ऐसा समय था जब भारत ने अपने दूतों को दूसरे देशों में उस रूप में नहीं भेजा जिस रूप में सम्राज्यवादी देश भेजा करते थे और भेजते हैं। हमारे राजदूत शांति, संस्कृति और सद्भावना का संदेश लेकर जाते थे। इसलिए जो झंडा मैं इस सदन को अर्पित कर रहा हूँ वह एक साम्राज्य का झंडा नहीं है बल्कि आज़ादी का झंडा है। न सिर्फ हमारे लिए बल्कि दुनिया में रहने वाले हर इंसान के लिए है। इसलिए यह झंडा अब जहाँ भी जायेगा, जहां हमारे राजदूत रहेंगे, जहां हमारे जहाज जायेंगे वहां वे शांति का संदेश देंगे। दूसरे देशों से मैत्री का संदेश देंगे। यह झंडा यह संदेश देगा कि वह दुनिया के सभी देशों से मैत्री चाहता है।

(15 अगस्त विशेष)

एकता कानूनगो बक्षी

जंजाल में उलझी असली समानता

हालांकि हरेक व्यक्ति एक दूसरे से काफी भिन्न होता है किन्तु अलग-अलग रंग रूप, कद काठी,आचार विचार, खान पान,रहन सहन के बावजूद कुछ आपसी समानताओं के कारण अलग-अलग समूहों में अनेक लोग एक खास पहचान के साथ दिखाई देते हैं। इनकी समझ, जीवन शैली और जरूरतों में एक तरह की समानता दिखाई देती है।

अब मित्रता को ही लीजिए। किसी से दोस्ती करने से पहले हम एक-दूसरे की समान रुचियों, जरूरतों ,पसंद नापसंद और विचारों की समानता के कारण ही जुड़ पाते हैं। समानता की वजह से ही हम अधिक सहज महसूस कर पाते हैं,आपसी रिश्ते भी अधिक गहरे और लंबे समय तक निभा पाते हैं।

आमतौर पर समान व्यवसाय, समान आर्थिक स्थिति, समान जाति,धर्म, लिंग,विचारधारा, समान लक्ष्यों,अभियानों, रुचियों को समानता का आधार बनाकर समूहों की पहचान चिन्हित या रेखांकित होती है । अलग-अलग विधाओं, कलाओं से जुड़े लोगों का समूह, एक जैसी राजनैतिक विचारधारा को मानने वाले लोगों का समूह,आस्तिक, नास्तिक, सामाजिक ,आर्थिक स्तर के अनुसार बना समूह, पुरुषों का,औरतों का समूह, उन औरतों का अलग समूह जो गृहिणी हैं और उनका अलग जो कामकाजी हैं। हमने भिन्नता से भरे समाज मे समानता के आधार पर एक ऐसा ताना बाना रच लिया है जिसमें हम ही खुशी खुशी कैद हो गए हैं। जरा सा भी अपने बनाये दायरे से बाहर निकले कि हम असहज और असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। दूसरों के समूह और उनके दायरे हमें बेहतर या कमतर नजर आने लगते हैं। समानता के आधार पर बटे समूहों के बाहर असमानता की ऐसी दीवारें खड़ी कर दी गई हैं जहां संवेदनाओं और अन्यों के दुख दर्दों को महसूस करने की अनुभूति का क्षरण होता नजर आता है। जितना हम समानता की अगुवाई करते हैं उतनी ही उसको लेकर हमारी समझ सीमित और जटिल बनती जाती है।

जिन समानताओं को हम ढूढते नज़र आते हैं वो बुनियादी तौर पर कृत्रिम या मनुष्य की ही बनाई दुनिया का हिस्सा है। जिसे कुछ लोगों ने मात्र अपनी स्वार्थपूर्ति या सुविधा के लिए खड़ा कर दिया है। हम कई समूहों में बटकर एक दूसरे से भले ही जुड़े हुए और मकान तक सीमित कहा जाता था उसमें आगे स्वास्थ्य,शिक्षा और समान नागरिक होने को जोड़ा जा सकता है। हम सभी को भोजन, जल, सुरक्षित स्थान, स्वास्थ्य, खुशी, अपनापन, सम्मान, अभिव्यक्ति और अपने आप को पूर्ण रूप से विकसित और प्रस्तुत करने की आज़ादी की ज़रूरत होती है।

नज़र आते हों पर हमारे आपसी रिश्ते तब तक आत्मीय, प्रगाढ़ और हितकारी नहीं हो सकते जब तक कि हम हमारी वास्तविक समानताओं का सही आकलन नहीं करते। ऐसा नहीं करके हम एक बड़े वर्ग को तिरस्कृत भी कर देते हैं।

असली समानताएं इतनी पेचीदा कभी नहीं हो सकतीं। असली समानता को समझने के लिए पूर्वाग्रह मुक्त बच्चों सा निष्कपट मन होना बेहद ज़रूरी है। जो दूसरों को उनके रंग, मज़हब, विचारधारा से न आंकते हुए बहुत जल्दी अपना लेता है। हम सब मे जो समानताएं हैं वे काफी सीधी सरल सी हैं। पहले कभी जिसे रोटी, कपड़ा

इन सब मे से किसी के भी अभाव में हम सब बिल्कुल एक जैसा ही छटपटाने लगते हैं। दो अलग अलग समूह के बाशिंदों को एक साथ बिना भोजन के रख दिया जाए दोनों का शरीर काफी हद तक एक जैसा व्याकुल होगा और भोजन के लिए संघर्ष करेगा। उसी तरह अपमानित होने पर भी हम सभी का मन एक जैसा ही दुखी होता है। जब हमें अपनापन और प्यार मिलता है तो हम सभी को खुशी मिलती है। आत्मीयता हमारे मन को भीतर से भीगो देती है। आनन्द में हम एक सा खिलखिला पड़ते हैं।

हमारी बुनियादी समानता हमे बार बार यह याद दिलाती रहती है कि हम सब भले ही अलग अलग रास्तों से गुज़र रहे हों पर सुख दुख तो हमारे साथी हैं ही। यह नहीं भुलाया जा सकता कि सबसे पहले हम मनुष्य हैं। यही हमारी सबसे बड़ी वास्तविक समानता और पहचान है। थोड़ा व्यापक दृष्टि से देखे तो हम पाएंगे कि प्रकृति के हर जीव से हमारा समानता का रिश्ता है। नन्ही चिड़िया के सुख दुख,दाना पानी की चिंता,मेहनत से अपना घरौंदा बनाने का संघर्ष क्या हम से मेल नही खाता। पौधे से कुछ पल बतियाइए, हो सकता है बिना खाद पानी के भी कुछ दिन और जीवित रह जाएगा वह।

जब हम समानताओं को अपनी संकीर्ण मानसिकता से परिभाषित करने लगते हैं तो हम प्रकृति का पूरा संतुलन ही बिगाड़ देते हैं। हम सब के भीतर मौजूद वास्तविक समानता का अर्थ और ध्येय तो मात्र यह होना चाहिए कि हम एक दूसरे को बेहतर रूप से समझ सकें और एक-दूसरे का जीवन आसान बना सकें।

जब हम असली समानताओं को समझ जाएंगे, सचमुच एक बड़ी सामाजिक क्रांति के कारक और साक्षी बन पाएंगे । दूसरों के हर संघर्ष को उचित सम्मान देने लगेंगे। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं रहेगा।कोई भी अपने काम को लेकर कुंठित नही होगा। काम का लिंग और जाति के अनुसार विभाजन नही होगा। हर रंग रूप मुस्कुराएगा। जातियों के आधार पर होने वाला भेदभाव समाप्त होने लगेगा। आदमी,औरत,थर्ड जेंडर जैसे वर्ग विभाजन की जटिलताओं की जगह मानवीयता मुस्कुराने लगेगी। ज़रूरी विषयो, मुद्दों पर बातचीत होगी। गैर जरूरी निरर्थक बहसों से मुक्ति सम्भव होगी। यह तभी हो पायेगा जब हम खुद को भली भांति पहचान पाएंगे। इसके लिए उस धूल को साफ़ करना जरूरी होगा जो बाज़ारीकरण,राजनीति, धर्म, सम्प्रदाय और लाभार्जन करने वाली संस्थाओं ने हमारी सामाज व्यवस्था पर चढ़ाकर हमे कठपुतली बना दिया है। उस से उबर कर जब हम अपने मूल प्राकृतिक स्वरूप में दुनिया और समाज को देखने लगेंगे तभी वास्तविक समानता लाने की असली क्रांति शुरू हो पाएगी।

स्वतंत्रता दिवस पर प्रार्थना

(15 अगस्त विशेष)

ध्रुव शुक्ल

प्रार्थना करता हूं कि अमरीका और यूरोप के अंधेरों का सामना करने के लिए पूरब बीती सदियों के अपने अंधेरों में ओझल प्रकाश को फिर पहचान सके। वह एशिया के जीवन और विपुल साधनों की रक्षा करने के उपाय करने में समर्थ हो सके। यह पूरब अपने आत्मबल और निर्भय पुरुषार्थ से यूरोप के अंधेरे के क्षेत्र को भी प्रकाशित कर सके।

प्रार्थना करता हूं कि लोकतंत्र और मानवाधिकार की पैरवी करने वाली दुनिया की राजनीतिक शक्तियां अपने सामरिक और आर्थिक अपराधों पर पश्चाताप करने की भावना से भर उठें। वे युद्ध और आतंक की रचना करके पृथ्वी के साधनों को लूटकर अपना गुजारा चलाने की कुटिल नीतियों पर शर्मिन्दा हों और सह-अस्तित्व के मार्ग पर सबके साथ चल सकें। वे समझ सकें कि परस्पर आश्रित संसार का जीवन ताक़तवर प्रतिबंधों से नहीं, आपसी सहकार और मैत्री से चलता है।

प्रार्थना करता हूं कि धर्म, मज़हब और रिलीजन में विभाजित दुनिया के लोग इनके सूक्ष्म भेदों को समझकर धरती पर एक ऐसी नागरिक संहिता पर विचार-विमर्श करने लगें जो उन्हें मतान्ध राष्ट्रीयता के पाखण्ड से मुक्त कर सके। सब उन वृक्षों की तरह पृथ्वी के नागरिक हो सकें जो अपनी जगह पर अडिग खड़े रहकर सबको छाया प्रदान करते हैं।

प्रार्थना करता हूं कि कामनाओं को भड़काते और तृष्णा को बढ़ाते बाज़ार के रेगिस्तान में मृग की तरह तृप्ति खोजते लोग अपने देश से बहुत दूर न निकल जायें। उन्हें अपना वह रास्ता याद रहे जिससे वे अपने घर लौट सकें। नयी प्रयोगशालाओं में महामारियों की रचना करके मौत से मुनाफा कमाने वाली शक्तियां अपने पापों को स्वीकार करें और शोक मनायें कि युद्ध और लूट के ताने-बाने पर सबके जीवन के लिए कोई चादर नहीं बुनी जा सकती। सब मिलकर इस सोच में डूब जायें कि इस पृथ्वी पर सबको मिला हुआ जीवन शान्त और सहज-सुंदर रह सके।

प्रार्थना करता हूं कि पृथ्वी पर जल कभी न सूखे। ऋतुएं प्रकृति के उपकारों की तरह सबके जीवन में आती रहें। नदी-निर्झर जैसा बहता चला आ रहा विराट जीवन अपने सुखसागर की ओर यात्रा करता रहे। सब अपने जीवन के खारे जल से अपने हिस्से का नमक उठा सकें। किसी को गुलामी स्वीकार न करना पड़े। टेक्नालाजी द्वारा निर्मित नकली मानव देह के आगे अपने ज्ञानात्मक संवेदन से भरी मानव देह जीवन्त बनी रहकर अपने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के पुरुषार्थ को निभा सके। अन्याय के विरुद्ध सविनय अवज्ञा और असहयोग की भावना से भरा उसका आत्मबल कभी न टूटे।

अंत में एक और प्रार्थना

जीवन के आध्यात्मिक ताप में डूबी इतनी कविताएं रची जायें और सबको ढाढस बंधा सकें कि कोई आत्महत्या के लिए विवश न हो। लोग काल, कर्म और ईश्वर को दोष दिए बिना अपनी खुदी को इतना बुलन्द कर सकें कि किसी को देर तक अपना ही इंतज़ार न करना पड़े।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आज की पीढ़ी और स्वतंत्रता दिवस का फैशन

आज हम सब के लिए गौरव का दिन है। आज हमारा राष्ट्रीय पर्व है। वह दिन जिसको पाने के लिए हमारे पुरखों ने अपना बलिदान दिया। यह बात हम सब जानते है कि कितनी कठिनाइयों से हमें यह दिन प्राप्त हुआ है। लेकिन प्रश्न अब यह है कि क्या सच में आज जिस तरह हम अपने देश को देखते है या इसमें जिस प्रकार अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर हम अपनों के साथ ही अन्याय कर रहे है क्या हमें इसी आज़ादी की प्रतीक्षा थी? बलिदानों से मिली इस आज़ादी को मान ना देकर हम व्यापीरी से बन गए है। जहां ज़रा सा भी अपना फायदा दिखता है हम वही उसी विचार को अपनी राय बना लेते है। बिना यह सोचे कि क्या उस विचार में हमारे देश की प्रगति भी है या नहीं।

आज हम स्वतन्त्रता मना रहे है, लेकिन कितने ही ऐसे अनमोल चेहरे है, जिन है जिन्हें हमने भुला दिया और जिनको याद भी रखा है तो बस तस्वीरों में उनकी बातों को हमने याद कभी रखा ही नहीं है। क्योंकि हम जानते है की यदि हम अपने स्वत्रर्ता सेनानियों की बातों को याद रखेंगे तो अपना लाभ कैसे सोच पाएंगे? झलकारी बाई हो या रानी चेनम्मा, दुर्गावती बोहरा (दुर्गा भाभी) हो या कनकलता बरुआ के साथ - साथ बीनादास और मातान्गिनी हजारा जैसी ना जाने कितनी शूरवीर महिलाओं की कहानी इतिहास के पन्नों में दब गई है। आज की पीढ़ी 15 अगस्त को फैशन के तौर पर सोशल-मीडिया पर मना तो रही है, पर उसमें भावनाओं की कमी है। आज की पीढ़ी को स्वतंत्रता का अर्थ समझना होगा। गुलामी के कठिन दौर में लोगों में अपने देश के प्रति निष्ठा और इमानदारी थी। इसके विपरीत आज लोगों में स्वार्थ की भावना है। जहां लाभ वहीं अपनी निष्ठा। ऐसी सोच से क्या हम अपने देश का भला सोच सकते है? हर आगामी पीढ़ी अपने साथ एक इतिहास को लाती है और भविष्य के लिए इतिहास को बनाने की हिम्मत भी रखती है। सोचना यह है कि भविष्य में पढ़े जाने वाला आज का हमारा इतिहास कैसा होगा? यह प्रश्न विचारणीय है। यहाँ किसी एक को सही या बाकीयों को गलत कहने की बात नहीं है, लेकिन अपने से उपर अपने देश को रखना यह हम सभी का नैतिक कर्तव्य है। फ्री की रेवड़ियों से हमें स्वयं को बचाना होगा। यह काम कोई एक राजनैतिक पार्टी नहीं कर रही है बल्कि सभी का एक जैसा ही हाल है। लेकिन हर पार्टी में न एक ऐसा होता है जिसके लिए देश सबसे उपर होता है। सोशल-मीडिया के दौर में हमें उस राजनेता को पहचानना होगा जो हमारा नेतृत्व सिर्फ राष्ट्र में ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भी पूरी योग्यता और समझदारी के साथ कर सकें।

आज हम सबसे कठिन दौर से गुज़र रहे है। हमारे पड़ोसी देशों में जिस प्रकार का माहोल है या देश के भीतर भी जिस प्रकार अराजकता का माहोल बनाने की कोशिश की जा रही है। उसको देखते हुए हमें सोशल-मीडिया के देशभक्त नहीं बल्कि वास्तविक शेष के प्रति समर्पित लोगों की ज़रूरत है। हमारे विचारों को दूसरों के सामने रखने में बशर्ते की हम इसका इस्तेमाल सही तरीके से करें। 15 अगस्त को तो जैसे सोशल-मीडिया पर बाढ़ सी आ जाती है, ठीक उसके अगले दिन सडकों के किनारों पर पैरों के नीचे मिलता है हमारा देश-प्रेम। यह हमें स्वीकार करना होगा कि आज हमारे भीतर हमारे देश को लेकर, या अपनी भाषा को लेकर कई प्रश्न उठते है और उठने भी चाहिए, क्योंकि हर प्रश्न यह बताता है की अभी हमारे भीतर भावनाएं है। बस प्रश्न पूछने और उत्तर को समझने के लिए धैर्यता का सहारा लेना चाहिए।

बदलते इस दौर में युवाओं की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ गई है। उनको अपनी क्षमताओं को साबित करना होगा। हिंसा एवं बदले की भावना को दरकिनार करते हुए अपने विचारों को हरना होगा और समाधान भी ढूंढना होगा।

जिस दिन हर लड़की, महिला, बच्चा स्वयं को सुरक्षित महसूस लगेंगे। जिस दिन अपने विचारों कि हम बताने के लिए अहिंसा का प्रयोग करना बंद कर देंगे। जिस दिन हर वर्ग, हर जाति, हर समुदाय और हर राजनैतिक पार्टी के लिए देश सबसे ऊपर रहने लगेगा, उसी दिन होगा आज़ादी का महा-पर्व। एक ऐसे ही सुनहरे कल की प्रतीक्षा में आप सबको आज की स्वतन्त्रता की बधाई।

स्वतंत्रता दिवस

नलिन खोईवाल

अदम्य साहस,शौर्य,संघर्ष और देश प्रेम की प्रतिमूर्ति - रानी अवंतीबाई

बाल्यावस्था से ही वीर तथा साहसी अवंती बाई ने बचपन में ही तलवारबाजी और घुड़सवारी के गुर सीख लिए थे। सत्तावन की क्रांति में रामगढ़ क्रांति का मुख्य केंद्र बिंदु बना। देश के लिए मर मिटने का जज्बा लिए रानी अवंती बाई मैदान में कूद पड़ी और अपने अदम्य साहस,शौर्य और संघर्ष के बल पर अंग्रेजी हुकूमत के नाक में दम कर दिया।

1857 के स्वाधीनता संग्राम में जिन वीरांगनाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और अपने प्राण तक निछावर कर दिए उनमें रामगढ़ की रानी अवंती बाई लोधी का नाम बड़े ही सम्मान और गौरव के साथ लिया जाता है। इनका जन्म मध्यप्रदेश के डिंडोरी में 16 अगस्त 1831 को हुआ। इनकी माता का नाम कृष्णा बाई व पिता का नाम राव जुझार सिंह था। इनके पिता सिवनी जिले के मनेकहड़ी के जागीरदार थे। बाल्यावस्था से ही वीर तथा साहसी अवंती बाई ने बचपन में ही तलवारबाजी और घुड़सवारी के गुर सीख लिए थे। सत्तावन की क्रांति में रामगढ़ क्रांति का मुख्य केंद्र बिंदु बना। देश के लिए मर मिटने का जज्बा लिए रानी अवंती बाई मैदान में कूद पड़ी और अपने अदम्य साहस, शौर्य और संघर्ष के बल पर अंग्रेजी हुकूमत के नाक में दम कर दिया।

साहस और संघर्ष की गाथा

इनका विवाह रामगढ़ के राजकुमार विक्रमाजीत के साथ 1850 में हुआ। विक्रमाजीत बहुत ही योग्य और कुशल शासक थे लेकिन धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण वह राजकाज में कम और धार्मिक कार्यों में ज्यादा समय देते थे। उनके दो पुत्र शेर सिंह और अमान सिंह छोटे ही थे कि विक्रमाजीत विक्षिप्त हो गए और राज्य का सारा भार रानी अवंती बाई के कंधों पर आ गया। रानी ने प्रतिज्ञा की कि तब तक वह चैन से नहीं बैठेंगी जब तक कि देश को अंग्रेजी सत्ता से मुक्त नहीं करा लेती । 1851 से इनके साहस और शौर्य की गाथा का आगाज हुआ और साल-दर-साल इनकी कीर्ति आसमान की बुलंदियों तक पहुंचती गई।

संगठन शक्ति की ललकार

लॉर्ड डलहौजी के राज्यों को हड़पने की नीति का कुचक्र पूरे देश में तेजी से चलने लगा तो कई राजवाड़े,जागीरदार और जनता अंग्रेजों के खिलाफ संगठित होने लगे। इसी क्रम में रानी अवंती बाई ने आसपास के ठाकुर, जागीरदारों,राजाओं और जनता को एकत्र कर अंग्रेजों के खिलाफ स्वाधीनता की अलख जगाई। क्रांति का संदेश गांव-गांव और घर-घर पहुंचाने के लिए अवंती बाई ने अपने हाथ का लिखा पर्चा भिजवाया कि देश और उसकी आन के लिए मर मिटो या फिर चूड़ियां पहन लो। तुम्हें धर्म इंसान की सौगंध है जो इस कागज का पता दुश्मन को दो। और इसी का परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लोग संगठित हुए और उनके दिलों में देश प्रेम का जज्बा जागा ।

स्वाभिमान और देश प्रेम का मनोभाव

जिस तरह से झांसी की रानी ने अंग्रेजी हुकूमत को ललकारते हुए कहा था कि मैं अपनी जान दे दूंगी पर झांसी नहीं दूंगी। उसी मार्ग पर चलते हुए रानी अवंती बाई ने भी अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिए पर मरते दम तक अंग्रेजी हुकूमत स्वीकार नहीं की। स्वाभिमान के साथ अपना संपूर्ण जीवन जिया और मन में देश प्रेम का भाव लेकर अंग्रेजों के नाक में दम कर दिया। आत्मसम्मान और स्वाभिमान ये दो मुख्य कारक थे कि अपमान के घूंट पीकर अंग्रेजों को उल्टे पांव वापस इंग्लैंड लौटना पड़ा।

विद्रोह का बिगुल

रानी अवंती बाई ने शहपुरा से अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूंका जिससे कि अंग्रेजी हुकूमत घबरा गई और उसके तहसीलदार डरकर उल्टे पांव भाग खड़े हुए। रानी ने शहपुरा का सरकारी खजाना अपने कब्जे में ले लिया और यहीं से बगावत का विस्तार हुआ। रानी अवंती बाई की विजय पताका फहराती गई और इनकी यश-कीर्ति का गान चहुंओर गूंजा।

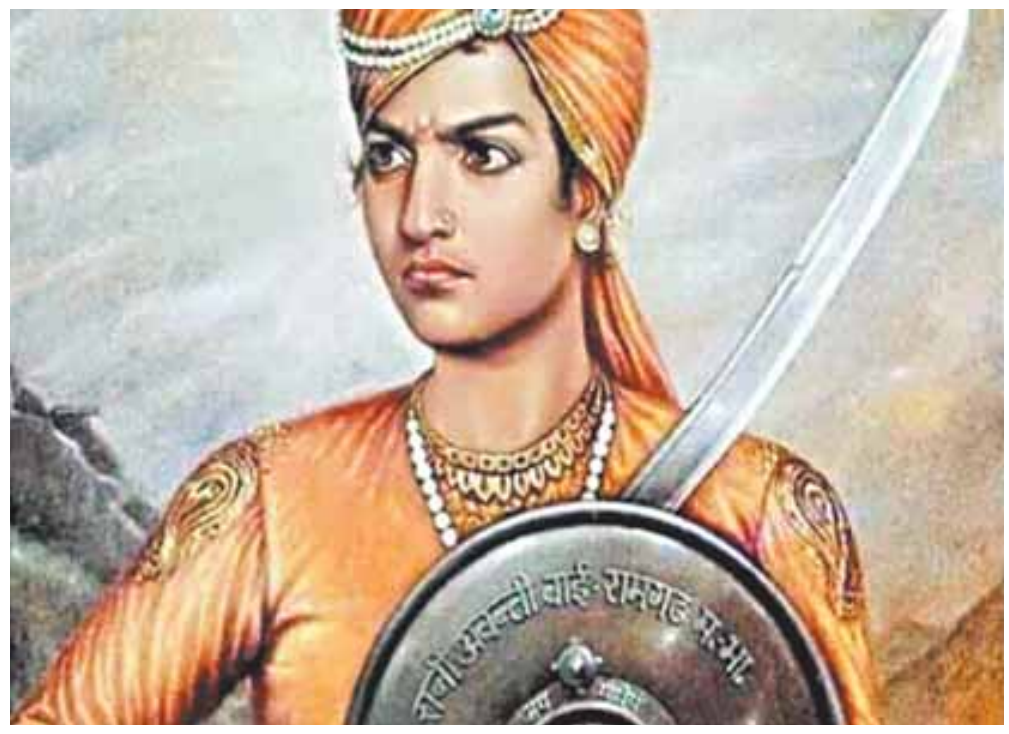

इतिहास की अमर कहानी

सात दिनों तक रामगढ़ कस्बे के सामने खुलकर युद्ध हुआ, जिसमें रानी अवंती बाई की पराजय हुई। रानी अपने सैनिकों के साथ जंगल में चली गई और वहां से अंग्रेज शिविरों पर आक्रमण करती रहीं, परंतु इनमें से एक आक्रमण घातक सिद्ध हुआ। अंग्रेजी सेना ने उनका पीछा किया। रानी ने पकड़े जाने से आत्मोत्सर्ग बेहतर विकल्प समझकर अपने एक साथी से तलवार लेकर अपने प्राणों की आहुति दे दी।

और इस तरह सत्तावन की क्रांति की सूत्रधार,वीर,साहसी और देश प्रेमी रानी अवंती बाई का नाम इतिहास में अमर हो गया। अवंती बाई ने अपनी प्रजा की रक्षा के लिए बलिदान देकर स्वतंत्रता आंदोलन की जो ज्वाला प्रज्ज्वलित की उसने देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। कहते हैं कि वीर कभी मरते नहीं इतिहास में अमर हो जाते हैं। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में रानी अवंती बाई की महती भूमिका को सदा याद रखा जाएगा।

(स्वतंत्रता दिवस विशेष)

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

देशभक्ति की प्यास है इस मिट्टी में

'ल हू वतन के शहीदों का रंग लाया है
उछल रहा है जमाने में नाम-ए-आजादी।'

भारत की पावन भूमि पर स्वतंत्रता दिवस का पर्व एक दिव्य उत्सव की भांति प्रतिवर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है। यह दिन, एक ऐसा दिन है जब समूचे भारतवर्ष के वीर सेनानियों के संघर्ष, उनके अद्वितीय बलिदान और असीमित धैर्य को श्रद्धांजलि दी जाती है। यह दिन केवल एक राष्ट्रीय अवकाश नहीं, अपितु एक राष्ट्रीय संकल्प है, जो हमें हमारी स्वतंत्रता के मूल्यों और उस संघर्ष की महत्ता का स्मरण कराता है, जो अनगिनत वीर सपूतों ने इस भूमि को स्वतंत्र कराने हेतु लड़ा था।

स्वतंत्रता संग्राम- वीरों की गाथा

भारत की स्वतंत्रता का संग्राम विश्व इतिहास का एक अभूतपूर्व उदाहरण है, जहाँ विभिन्न जातियों, धर्मों, और संस्कृतियों के लोग एकत्रित होकर एक साझा उद्देश्य के लिए लड़े। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, जिसे सिपाही विद्रोह भी कहा जाता है, वह प्रथम चिंगारी थी जिसने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की नींव रखी। इस विद्रोह ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनाक्रोश को स्पष्ट रूप से प्रकट किया और यह सिद्ध किया कि भारतीय जनता की सहनशीलता की सीमा समाप्त हो चुकी है।

मगर, यह केवल शुरुआत थी। इसके बाद महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च, भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलनों ने ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस जैसे वीर सेनानियों की कुर्बानी ने स्वतंत्रता के संग्राम को बल प्रदान किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य स्वतंत्रता सेनानी संगठनों ने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक प्रयास किए, जिनमें सत्याग्रह, धरना-प्रदर्शन, और सविनय अवज्ञा जैसे अहिंसात्मक आंदोलन प्रमुख थे।

15 अगस्त 1947 को, भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त की। यह दिन न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रतीक बना, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, समाज और सभ्यता की विजय का भी प्रतीक था। आज हिंदुस्तान तो -

'गूंज रहा है दुनिया में हिंदुस्तान का नारा
चमक रहा है आसमान में तिरंगा हमारा।'

आजादी के बाद भारत की स्थितियाँ

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, भारत को एक नए युग की ओर बढ़ने का अवसर मिला, लेकिन चुनौतियाँ भी कम नहीं थीं। विभाजन की त्रासदी से उत्पन्न सामाजिक, धार्मिक, और आर्थिक समस्याओं ने नए भारत को बुरी तरह से प्रभावित किया। लाखों लोग अपने घरों से बेघर हुए, विभाजन के कारण देश में सांप्रदायिक दंगे भड़के, और हजारों निर्दोष लोग अपनी जान गंवा बैठे।

विभाजन के उपरांत, भारत ने नए सिरे से खुद को संगठित किया। संविधान निर्माण के लिए एक संविधान सभा का गठन किया गया, जिसके नेतृत्व में डॉ. भीमराव अंबेडकर ने एक ऐसा संविधान तैयार किया, जिसने भारत को एक धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी और लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में परिभाषित किया। 26 जनवरी 1950 को भारत ने अपने संविधान को अंगीकार कर, गणतंत्र राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने आधुनिकता की ओर कदम बढ़ाया। औद्योगिकीकरण, कृषि सुधार, पंचवर्षीय योजनाओं, और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में निवेश के माध्यम से राष्ट्र ने अपनी आर्थिक और सामाजिक प्रगति को सुनिश्चित किया। भारत ने अपनी विदेश नीति को भी तटस्थता और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित रखा,

जिसमें गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रमुख भूमिका रही।

वर्तमान भारत में स्वतंत्रता की चुनौतियाँ

आज, स्वतंत्रता के 75 से अधिक वर्षों के पश्चात, भारत एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। आर्थिक प्रगति, वैज्ञानिक अनुसंधान, और सैन्य क्षमता में वृद्धि के बावजूद, वर्तमान भारत में स्वतंत्रता की कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। सबसे प्रमुख चुनौती भारत की सांप्रदायिक एकता को बनाए रखने की है। जातीयता, धर्म, और भाषाई विविधता भारत की शक्ति भी है और कभी-कभी संकट का कारण भी बनती है। कुछ स्थानों पर बढ़ती असहिष्णुता, सांप्रदायिक तनाव, और धार्मिक कट्टरता ने देश की एकता को खतरे में डाल दिया है। यह चुनौती हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के उस मूल सिद्धांत के विपरीत है, जहाँ विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग एकजुट होकर लड़े थे। जरूरत है-

'क्यों करते हो दंगों और धमाको की ये जिद्द,
खण्डित नहीं होगा,अखण्ड है ये हमारा हिन्द !!'

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती आर्थिक विषमता की है। यद्यपि भारत ने पिछले कुछ दशकों में तेजी से आर्थिक विकास किया है, लेकिन गरीबी, बेरोजगारी, और असमानता की समस्याएँ अब भी विद्यमान हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जीवन स्तर की विशाल असमानता, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता में भिन्नता, और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार की आवश्यकता हमें स्वतंत्रता के सच्चे अर्थ की ओर उन्मुख करती है।

तीसरी चुनौती अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़ी है। एक लोकतांत्रिक देश में, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, और विचारों की स्वतंत्रता का अत्यधिक महत्व है। हाल के वर्षों में, कई लोग इन स्वतंत्रताओं पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण चिंता व्यक्त कर रहे हैं। सरकार और जनता के बीच संवाद का महत्व, लोकतंत्र की मजबूती के लिए अनिवार्य है। यदि इस संवाद में बाधा उत्पन्न होती है, तो यह स्वतंत्रता की भावना के विरुद्ध होगा।

चौथी चुनौती सुरक्षा से संबंधित है। आतंकवाद, सीमा विवाद, और साइबर हमले, जैसे नए युग की चुनौतियाँ, देश की संप्रभुता और स्वतंत्रता के लिए गंभीर खतरे हैं। यह आवश्यक है कि भारत अपने सुरक्षा तंत्र को और अधिक सशक्त बनाए और वैश्विक समुदाय के साथ मिलकर आतंकवाद के खिलाफ सशक्त कदम उठाए।भारत का स्वतंत्रता दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि हमारी स्वतंत्रता की रक्षा और उसे बनाए रखने के लिए हमें सतत सतर्क रहना होगा। स्वतंत्रता केवल एक अधिकार नहीं है, बल्कि यह एक जिम्मेदारी भी है। स्वतंत्रता के मूल्यों की रक्षा के लिए हमें उन वीर सेनानियों के बलिदान को स्मरण करना होगा, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी। आज, जब हम 21वीं सदी के भारत की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, तब हमें अपने पूर्वजों के संघर्ष और उनके आदर्शों से प्रेरणा लेते हुए एक समृद्ध, सुरक्षित, और सशक्त भारत के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए। भारत की मिट्टी की खुशबू को बचाए रखना हम सब भारत वासी का ही फ़र्ज़ है-

'कुछ तो खास है इस मिट्टी में,
एक अलग ही एहसास है इस मिट्टी में,
यूं ही हंसते हुए मौत के मुंह नहीं जाते,
देशभक्ति की प्यास है इस मिट्टी में।'

इस स्वतंत्रता दिवस पर, हम सभी को अपने भीतर की स्वतंत्रता की भावना को पुनर्जीवित करते हुए, देश की एकता, अखंडता, और समृद्धि के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। यह दिन केवल उत्सव का नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और पुनः संकल्प का भी दिन है, ताकि भारतवर्ष अपने सुनहरे भविष्य की ओर निरंतर अग्रसर होता रहे। अगर हर भारतीयों ने अपना फर्ज़ निभाया तो एक दिन-

'वतन के जाँ-निसार हैं वतन के काम आएँगे
हम इस ज़मीं को एक रोज आसमाँ बनाएँगे।'

(स्वतंत्रता दिवस विशेष)

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर,गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र,कोलकाता ।

स्वतंत्रता दिवस की स्मृतियां

15 अगस्त 1947 की सुबह एक नई उमंग,उत्साह और स्फूर्ति लेकर आई थी साथ ही उसमें शामिल था स्वतंत्रता का बोध, वह स्वतंत्रता जिसके लिए हर भारतवासी ने एक लंबा संघर्ष और लंबा इंतजार किया था। हम आज भी इस दिन गजब के रोमांच को हर भारतीय में महसूस कर सकते हैं। जब हम सभी जाति,वर्ग,धर्म,लिंग और संप्रदाय से भिन्न होते हुए राष्ट्रीय ध्वज के तले एक नागरिक के बतौर पर खड़े होते हैं। भारतीय सिनेमा में भी आजादी के इस ऐतिहासिक दिन को बहुत ही संजीदगी के साथ मार्मिकता से फिल्माया गया जिसमें सभी भारतीयों को नाचते-गाते जश्न मनाते हुए और लोगों की संख्या (भीड़) को देखा जा सकता है,जो दिन और रात के फर्क से परे आजादी के जश्न में शामिल थी। 15 अगस्त 1947 के 17 वर्षों पूर्व ही हम भारतीयों ने अपना पहला 'स्वतंत्रता दिवस' मना लिया था। जनवरी 1930 के पहले सप्ताह में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लाहौर में आयोजित वार्षिक अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया था जिसके तहत महीने के आखिरी रविवार को पूर्ण स्वराज्य के समर्थन में देशव्यापी आंदोलन करने का आह्वान किया गया था। इसी अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस अध्यक्ष चुना गया था। इस प्रस्ताव को पारित करने का उद्देश्य यह था कि इससे देशवासियों में राष्ट्रवादी भावना का संचार होगा और ब्रिटिश सरकार गंभीरतापूर्वक स्वतंत्रता की मांग मानने को मजबूर होगी। इस खास 'स्वतंत्रता दिवस' को किस प्रकार मनाया जाना चाहिए, महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' में लेख लिखकर आवाम को बताया। गांधी जी ने कहा कि 'यह बेहतर होगा कि आजादी की घोषणा सारे गांवों और सारे शहरों में एक साथ ही की जाए यह और भी अच्छा होगा कि सभी जगहों पर इस संदर्भ में एक ही खास समय पर बैठक की जाए'। गांधी जी ने सलाह दी कि इन बैठकों का समय पारंपरिक रूप से ढोल-नगाड़ा पीटकर प्रचारित किया जाए। समारोह की शुरुआत राष्ट्रीय झंडे को फहराकर की जाए। दिन का शेष समय 'रचनात्मक कार्यों को करके बिताया जाए,चाहे यह चरखे पर सूत कातना हो,अछूतों की सेवा करना हो, हिंदू-मुसलमानों का मिलन हो या कोई काम करने से इनकार करना हो। ये सभी कार्य साथ साथ भी हो सकते हैं, यह असंभव नहीं है'। गांधी जी ने कहा कि इसमें हिस्सा लेने वाले लोग शपथ लें कि 'आजादी,भारतीय जनता और दुनिया के किसी भी हिस्से में रहने वाली जनता का प्राकृतिक अधिकार है ताकि वे अपनी मेहनत के फल के खुद अधिकारी हों और अगर कोई भी सरकार उनको उनके इस अधिकार से वंचित कर उनका दमन करती है तो उन्हें ये अधिकार है कि वे इसका विरोध करें और उस सत्ता को खत्म कर दें'। नेहरू अपनी आत्मकथा में 26 जनवरी 1930 को याद करते हुए लिखते है कि 'कैसे 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाने का फैसला किया गया था और कैसे देशवासियों की छटपटाहट और उत्साह के रूप में बिजली की तरह हमारे सामने व्यक्त हुआ। हर जगह लोगों की भारी भीड़ बिना किसी आवाज या शोरगुल के शांतिपूर्वक और पूर्ण निष्ठा से आजादी की शपथ ले रही थी। वह दृश्य बहुत ही प्रभावशाली था और उसमें जरूर कोई खास बात थी'। 27 जनवरी 1930 को जारी किए गए अपने बयान में नेहरू ने 'बड़े ही आदरपूर्वक पूरे देश को इस निष्ठापूर्ण और अनुशासनबद्ध प्रदर्शन के लिए बधाई संदेश दिया'। गांवों और शहरों में 'आजादी के प्रति अपने उत्साह को प्रदर्शित करने की होड़ लग गई'। कलकत्ता और बंबई में इस अवसर पर लोगों की भारी भीड़ जमा हुई और छोटे शहरों में भी अच्छी खासी तादाद में लोग इकट्ठे हुए। 1930 के बाद से प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाने लगा। 15 अगस्त 1947 को सत्ता हस्तांतरण के दिन के रूप में चुना गया। कुछ लोग ऐसे भी थे जो स्वतंत्रता दिवस याने 26 जनवरी के खास दिन ही सत्ता का हस्तांतरण करवाना चाहते थे लेकिन माउंटबेटन और कुछ अन्य लोग स्वतंत्रता के लिए अब और इंतजार नहीं करना चाहते थे । ज्योतिषियों ने कहा था कि 15 अगस्त का दिन आजादी हासिल करने के लिए शुभ दिन नहीं है। इसलिए यह तय किया गया कि 'स्वतंत्रता दिवस समारोह 14 अगस्त को ही शुरू कर दिया जाए,जिसके तहत संविधान सभा की एक विशेष बैठक हो। संविधान सभा जो भारतीय प्रतिनिधियों की एक सभा थी और संविधान बनाने का कार्य कर रही थी। समारोह 14 अगस्त की रात 11 बजे प्रारंभ हुआ और सर्वप्रथम वंदेमातरम् गाया गया। इसके बाद दो मिनट का मौन उन लोगों के लिए रख गया जिन्होंने आजादी की इस लड़ाई के दौरान भारत या भारत से बाहर अपनी जान की कुर्बानी दी थी। इस रात तीन महत्वपूर्ण व्यक्तियों का भाषण होना निर्धारित था । इनमें से पहले चौधरी खालिकज्जमा थे जिन्हें हिंदुस्तान में मुसलमानों की नुमाइंदगी के लिए चुना गया था। इन्होंने अपने भाषण में यह घोषणा की कि यहां अल्पसंख्यक समुदाय के लोग इस नए आजाद मुल्क के प्रति अपनी वफादारी निभाने में पीछे नहीं हटेंगे। दूसरे वक्ता डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे जिन्होंने पूर्वी और पश्चिमी सभ्यता के बीच सामंजस्य के बिंदु खोजने की दिशा में काफी काम किया था। उन्होंने अंग्रेजों के राजनीतिक साहस और दूरदर्शिता की तारीफ की। स्वतंत्रता दिवस समारोह का केंद्र बिंदु जवाहरलाल नेहरु थे जो तीसरे वक्ता और स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। नेहरू जी का भाषण,भावनाओं और अलंकार से भरपूर था। तब से लेकर आज तक उनके भाषण का उद्धरण बड़े पैमाने पर दिया जाता रहा है। नेहरू ने कहा,'मध्यरात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोश में सो रही है, हिंदुस्तान एक नई जिंदगी और आजादी के वातावरण में अपनी आंख खोल रहा है'। 'यह एक ऐसा क्षण है जो इतिहास में बहुत कम ही प्रकट होता है, जब हम पुराने युग से नए युग में प्रवेश करते हैं। जब एक युग खत्म होता है और जब एक देश की बहुत दिनों से दबाई गई आत्मा अचानक अपनी अभिव्यक्ति पा लेती है'। मंत्रिमंडल में प्रधानमंत्री नेहरू के अतिरिक्त 13 अन्य लोगों के नाम भी शामिल थे। लेकिन सबसे अहम बात इस मंत्रिमंडल की यह थी कि इसमें ऐसे लोगों को भी शामिल किया गया था जो कांग्रेस से संबंधित नहीं थे और तीन ऐसे लोग भी थे जो कांग्रेस के विरोधी थे। इनमें से एक मद्रास के आर. के.शणमुखम शेट्टी, दूसरे डॉ. भीमराव अंबेडकर और तीसरे बंगाल के श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे। गांधी जी ने नेहरू जी को पहले ही सतर्क कर दिया था कि 'आजादी हिंदुस्तान को मिल रही है कांग्रेस को नहीं'। गांधी ने उनसे कहा था कि 'मंत्रिमंडल के गठन में सबसे काबिल लोगों को जगह मिलनी चाहिए,चाहे वह किसी भी पार्टी का क्यों न हो'। नेहरू और उनके सहयोगियों ने गांधी जी की सलाह के मद्देनजर मतभिन्नताओं को बड़ी बुद्धिमता के साथ दरकिनार कर दिया। स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रिमंडल राजनीतिक चरित्र का न होकर राष्ट्रीय चरित्र का था। जिसमें समूचे देश का प्रतिनिधित्व था। दिल्ली के साथ पूरे देश में सरकार और आम लोगों ने काफी उत्साह के साथ आजादी का स्वागत किया। राजधानी दिल्ली के साथ तीन सौ जगहों पर झंडा फहराया गया। बंबई के मेयर ने होटल ताजमहल में रात्रिभोज का आयोजन किया। हिंदुओं के धार्मिक शहर बनारस में एक मुसलमान द्वारा राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। शिलांग में गर्वनर की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में चार नौजवानों ने राष्ट्रीय झंडा फहराया। इन नौजवानों में हिंदू और मुसलमान लड़के-लड़कियों के दो जोड़े थे। यह प्रतीकात्मक तौर पर किया गया क्योंकि एक नए भारत का जन्म हो रहा था और इसका झंडा नौजवानों द्वारा ही फहराया जाना उचित था। एक विदेशी पर्यवेक्षक ने लिखा है कि 'शहर-दर-शहर प्रत्येक जगह लोगों की भारी भीड़ जश्न मना रही है। ऐसा लगता है कि लंबे समय से दबी कुंठा बाहर निकल आई हो। झुंड के झुंड लोग मिल और कारखानों के इलाकों से निकलकर सुनहरे रेत वाले समंदर के किनारे तक गए। खुशी से नाचते-गाते लोगों ने उत्साहपूर्वक समारोह मनाया। लोग दशकों से जमा हुए उस गुस्से को भूल गए,जो अंग्रेज साहबों की टोपी देखकर उनके मन में भड़क उठती थी। देश के सबसे बड़े शहर और भारत की पूर्व राजधानी कलकत्ता में स्वतंत्रता समारोह खास तरह से मनाया गया। मकानों, इमारतों,कारों और साइकिलों पर हर जगह तिरंगे लहराने लगे। लड़कियों और बच्चों ने तिरंगे अपने हाथों में पकड़ रखे थे। जानवरों की पीठ पर भी राष्ट्रीय झंडा टांग दिया गया था। बंगाल के सेवानिवृत्त हो रहे गवर्नर सर फ्रेडरिक बरोज जब गवर्नर हाउस से बाहर निकले तो उन्हें भी किसी ने एक सफेद गांधी टोपी पहना दी। दिल्ली में जब संविधान सभा के अध्यक्ष ने सभा की शुरुआत महात्मा गांधी को संबोधित करते हुए की,तो सभाकक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। तालियां लंबे समय तक बजती रही। बाहर लोगों की भीड़ 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगा रही थी। लेकिन देश की राजधानी में होने वाले समारोह में गांधी जी मौजूद नहीं थे। गांधी उस दिन कलकत्ता में थे और उन्होंने वहां भी न तो किसी कार्यक्रम में शिरकत नहीं की और न ही झंडा फहराया। भारत विभाजन के कारण फैली हिंसा और हिंदू-मुस्लिम नरसंहार ने गांधी जी को अत्यंत दुखी कर दिया था। जबकि वे लगातार रचनात्मक कार्यक्रमों के मार्फ़त हिंदू-मुस्लिम एकता और साम्प्रदायिक सौहार्द्र के लिए कार्य कर रहे थे। गांधी जी के बारे में हमारा खयाल है कि धर्म,जाति,वर्ग और पीढ़ियों से परे उन्हें पूजा जाता है लेकिन फ्रेंच लेखिका हेलेन सिक्सू को इसमें संदेह है वे कहती है कि 'दरअसल गांधी से नफरत की जाती थी और आज भी की जाती है। भारत में नफरत जीवित है, इसी कारण गांधी मारे गए'। गांधी के पक्ष में आज भी अंतिम व्यक्ति खड़ा है जो गांधी के बताए मार्ग से अपने अधिकारों और न्याय की रक्षा करता है। आजादी के अमृतकाल में नेहरू के साथ भी यही नफरत उन्हें बार बार कठघरे में खड़ा करती है और हर गलती का जिम्मेदार ठहरती है। नेहरू एक लोकतांत्रिक व्यवस्था से परिपूर्ण देश बनाना चाहते थे जो धर्मनिरपेक्ष हो,तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न हो लेकिन हम नेहरू के आईडिया ऑफ इंडिया को सही तरीके से समझ ही नहीं पाए और बटे रहे धर्म, जाति,लिंग,वर्ग और संप्रदाय के आधार पर और इस विभेद की खाई को लगातार बढ़ाते रहे। इस स्वतंत्रता दिवस पर क्यों न हम सभी एक नई पहल कर भेदभावों के इन आधारों से स्वतंत्र हो मानवीय मूल्यों, परस्पर प्रेम और सहयोग से नए भारत का निर्माण करें।

विश्व रिकॉर्ड में शामिल हुए बैतूल के कवि दीपक साहू

कवि सम्मेलन में शानदार काव्य पाठ कर श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध

● **बीना में 10 अगस्त को एक साथ हुआ था कवि सम्मेलनों का आयोजन**

बैतूल। यह जिले के लिए अत्यंत गौरव की बात है कि जिले के बेटे का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हो गया है। दरअसल 10 अगस्त को बीना शहर के 9 अलग-अलग स्थानों पर एक ही समय में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। आयोजन को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज किया है। इस आयोजन में बैतूल के खेड़ली बाजार निवासी युवा कवि दीपक साहू ने भी शानदार काव्य पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था। उन्हें पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

गिनीज बुक के यह पहुंचे थे अधिकारी- गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के अभिषेक निगम, निर्णायक अधिकारी संदीप सोमानी, सीईओ संतोष शुक्ला बीना पहुंचे थे। कार्यक्रम में कवियों को ग्रामीण एवं विकास मंत्री प्रहलाद पटेल द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। सम्मेलन में कुल 80 कवियों ने भाग लिया था। आयोजन शहर के अलग-अलग स्थानों पर एक ही समय में किया गया था। जिन्हें गिनीज बुक के अधिकारियों द्वारा रिकॉर्ड पर लिया गया।

टीम का किया संचालन- बीना शहर में आयोजित एक ही समय में अलग-अलग स्थानों पर नौ कवि सम्मेलन में, बैतूल जिले से कवि दीपक साहू सरस खेड़ली बाजार ने बीना की अवधश्री होटल में एक कवि सम्मेलन की टीम का संचालन के साथ काव्य पाठ किया था। दीपक साहू सरस ने जिस कवि सम्मेलन की टीम का संचालन किया था उसमें जाने-माने कवि कुमार नितेश नैश भोपाल, दिनेश याज्ञिक देवनगर, प्रमोद साहू पारखी तुमसर महाराष्ट्र, विजय गिरी बारूद भोपाल, श्रीमती मंजू कारेमोरे नागपुर महाराष्ट्र शामिल थे। सभी ने बहुत ही शानदार काव्य पाठ किया था।

आयोजक की हुई सराहना- गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा कवि सम्मेलन को नोटिस करने पहुंचे अधिकारियों द्वारा कार्यक्रम के आयोजक सुनील समैया की सराहना करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक नर्मदा आव्हान सेवा समिति के सचिव, साहित्य प्रेमी किशोर कैप्टन करैया द्वारा नौ कवि सम्मेलन के 80 कवियों पर अपनी नजरें बनाये रखी व अपने मार्गदर्शन में कवि सम्मेलन सम्पन्न कराने में अहम योगदान दिया।

योजना बनाने का दिया आश्वासन- अधिवेशन के प्रथम सत्र में म. प्र. शासन के संस्कृति मंत्री धर्मेन्द्र लोधी द्वारा अपने उद्बोधन में साहित्यकारों के उज्ज्वल भविष्य व संस्कृति विभाग द्वारा साहित्यकारों के लिए विशेष रूप से योजना बनाने की बात कही। अधिवेशन के द्वितीय सत्र में मध्यप्रदेश शासन के पंचायत, ग्रामीण विभाग व श्रम मंत्री प्रहलाद पटेल द्वारा संबोधित किया व दीपक साहू सरस को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया व पूर्व छात्र बड़ी संख्या में मौजूद थे।

स्वतंत्रता दिवस समारोह के जिलास्तरीय कार्यक्रम में राज्यमंत्री श्री पटेल करेंगे ध्वजारोहण

पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित होगा मुख्य समारोह

बैतूल। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जिलास्तरीय मुख्य समारोह स्थानीय पुलिस ग्राउंड में आयोजित होगा। समारोह में राज्य मंत्री, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग व प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल प्रातः 9 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्य समारोह में प्रातः 9 बजे मुख्य अतिथि राज्यमंत्री ध्वजारोहण करेंगे। इस अवसर पर सलामी एवं राष्ट्रगान होगा। तत्पश्चात मुख्य अतिथि परेड निरीक्षण करेंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन होगा। इसके उपरांत स्वतंत्रता दिवस परेड एवं मार्च पास्ट का आयोजन होगा। इसके पश्चात् स्कूली विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। कार्यक्रम के अंत में पुरस्कारों एवं प्रशस्ति-पत्रों का वितरण होगा।

घर के सामने खड़ी बाइक चोरी, आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। जिले के सारणी थाना क्षेत्र में 3 दिन पहले घर के सामने खड़ी एक पैशन प्रो बाइक चोरी हो गई थी। शिकायत पर पुलिस ने बाइक चुराने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से चोरी की बाइक भी बरामद कर ली है। आरोपी को न्यायालय से जेल भिजवा दिया है।

पुलिस ने बताया कि 10 अगस्त को फरियादी ने रिपोर्ट की कि उसकी मोटरसाइकिल पैशन प्रो रजिस्ट्रेशन नंबर एमपी-48/एमएल-3885 को घर के सामने दोपहर 2 बजे खड़ी कर घर के अंदर चला गया था। करीब 1 घंटे बाद घर से बाहर आकर देखा तो मोटर साइकिल नहीं थी। जिसे कोई अज्ञात चोर चुरा कर ले गया है। रिपोर्ट पर अपराध पंजीबद्ध कर वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में मोटर साइकिल व अज्ञात चोर की तलाश पतारशी की गई। विवेचना के दौरान ज्ञात हुआ कि आरोपी प्रकाश पिता नारायण पवार निवासी बजरंग कॉलोनी पाथाखेड़ा ने उक्त मोटर साइकिल चोरी की है।यह सूचना मिलने पर प्रकाश को पकडक़र पूछताछ की। जिसने बताया कि उक्त मोटर साइकिल उसने चुराई है। जिसके बताए अनुसार संत रविदास नगर पाथाखेड़ा से चोरी की उक्त मोटरसाइकिल जब्त की गई। आरोपी को गिरफ्तार न्यायालय बैतूल पेश किया गया। जहां से उसे जेल भेजा गया। आरोपी की गिरफ्तारी में निरीक्षक अरविंद कुमरे थाना प्रभारी सारणी, उपनिरीक्षक सुनील गौर, प्रधान आरक्षक किसन शेलू, आरक्षक जितेन्द्र जाट, रामसिह इवने की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बैतूल-मुलताई में एक खेत में मिला अज्ञात युवक का शव पुलिस कर रही जांच

बैतूल। मुलताई के बीरूल बाजार रोड पर राकेश अग्रवाल निवासी मुलताई उनके खेत में एक अज्ञात युवक का शव मिला है। पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई है। फिलहाल शव नहीं हो सकी है। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुट गई है। मुलताई थाना प्रभारी राजेश सातनकर ने बताया कि घटना स्तर पर एक मोटरसाइकिल भी मिली है और शव लगभग 8 से 10 दिन पुराना प्रतीत हो रहा है। एफएसएल की टीम को सूचना दे दी गई है। वही जांच के बाद स्पष्ट करेगी कि कितना पुराना शव है।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर कलेक्टर, एसपी की अगुवाई में निकली तिरंगा यात्रा

लहलहाते तिरंगे, वंदे मातरम् और भारत माता के जयकारों से गूंजा शहर

बैतूल। देश की आजादी में वीर सपूतों के योगदान और उनकी शहादत की याद में बुधवार को कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी एवं पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया की अगुवाई में जिला प्रशासन तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर हर घर तिरंगा अभियान के तहत जिला प्रशासन के अधिकारियों द्वारा निकाली तिरंगा यात्रा नगर पालिका ऑडिटोरियम से प्रारंभ हुई। तिरंगा रैली में मुख्य अतिथि के रूप में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल उपस्थित थे। तिरंगा रैली के दौरान शहर वंदे मातरम और भारत माता के जयकारों से गूंज उठा। तिरंगा यात्रा में लगभग 2 हजार प्रतिभागियों नें सहभागिता की। नगर पालिका ऑडिटोरियम से शुरू यह यात्रा शहर के मुख्य मार्गों अंबेडकर चौक, रैन बसेरा, कारगिल चौक, अस्पताल चौक, टैक्सी स्टैंड, शिवाजी चौक से होकर आडिटोरियम पर समाप्त हुई। रैली में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी, जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी पूजा कुरील, जिला शिक्षा अधिकारी अनिल कुशवाह, सामाजिक न्याय विभाग अधिकारी वर्ग, अध्यक्ष सीए एसोसिएशन प्रदीप खंडेलवाल सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

नशा मुक्ति की दिलाई शपथ

पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया ने तिरंगा यात्रा के शुभ अवसर पर खिलाड़ी, वरिष्ठ खिलाड़ी, विद्यालय, महाविद्यालय से आए एनसीसी, एनएसएस, के छात्र-छात्राएं, पुलिस बल एवं उपस्थित सभी गणमान्य नागरिकों को ध्वज रक्षा एवं नशा मुक्ति की शपथ दिलाई एवं भव्य तिरंगा यात्रा की कलेक्टर के साथ अगुवाई की। तिरंगा रैली के अनुक्रम में ऑडिटोरियम में आयोजित भूतपूर्व सैनिक अशोक रघुवंशी एवं नारायण अमरूते का सम्मान किया गया। तिरंगा यात्रा में लगभग 2 हजार प्रतिभागियों ने सहभागिता की। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव की मंशा के अनुरूप हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत गतिविधियां संचालित की जा रही है। प्रदेश सरकार की मंशा के अनुरूप हर घर तिरंगा यात्रा को एक पर्व एक राष्ट्रीय त्योहार के रूप में हर वर्ष मनाया जाएगा।

जिले का पांच वर्ष का विजन डॉक्यूमेंट होगा तैयार

कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को अपने विभाग का प्लान तैयार करने को कहा, जनप्रतिनिधियों से भी ली जाएगी सलाह

बैतूल। आगामी पांच वर्षों के लिए जिले का विजन डॉक्यूमेंट तैयार करने का प्लान जिला प्रशासन ने बनाया है। सभी विभागों से कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने इस संबंध में अपने विभाग का विजन मांगा है। इस विजन में जनप्रतिनिधियों की भी अलग-अलग राय ली जाकर ब्यौरा तैयार करने के निर्देश के बाद सभी विभाग प्रमुख इसकी तैयारी में जुटे हैं। कलेक्टर ने इस प्लान की मॉनिटरिंग के लिए जिला पंचायत सीईओ अक्षत जैन को नोडल अधिकारी बनाया है। वे सभी विभागों से विजन डॉक्यूमेंट मिलने के बाद रिपोर्ट कलेक्टर को सौंपेंगे।

सामान्य तौर पर जिले के विकास के लिए कार्ययोजना बनते आ रही है। सांसद और विधायकगण अपने क्षेत्र के लिए मुख्यमंत्री से कई मांग करते रहते हैं, लेकिन इस मर्तबा खुद अधिकारी भी इसमें रूचि दिखा रहे हैं। इससे जिले के विकास को पंख लगने से इंकार नहीं किया जा सकता है। दरअसल पिछले दिनों जिले के सांसद और विधायकों के साथ जिले के विजन डॉक्यूमेंट तैयार करने के लिए बैठक हुई थी। इस बैठक में तय किया गया था कि सभी विभाग अपने कार्यक्षेत्र में संभावित गतिविधियों और विकास को लेकर प्लान तैयार करेंगे। इस बैठक में जिले के सभी विधायकों ने अपनी सहमति देकर कई सुझाव दिए थे।

सुझाव पर अमल की तैयारी शुरू

सूत्रों ने बताया कि विधायकों के साथ बैठक के बाद जिले के मुखिया नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने टीएल की बैठक में भी इस संबंध में सभी अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। सूत्रों के मुताबिक कलेक्टर ने खुद जिले के विकास में रुचि दिखाते हुए सभी विभाग प्रमुखों को निर्देश दिए हैं कि आगामी पांच वर्ष के लिए विजन डाक्यूमेंट को तैयार किया जाए। इस प्लान में अपने विभाग का पांच वर्ष में किए जाने वाले बड़े कार्य को शामिल करें, ताकि विकसित बैतूल का सपना पूरा किया जा सके। कलेक्टर ने निर्देश दिए है कि प्रत्येक विभाग का प्लान तीन पेज का तैयार किया जाकर सारगर्भित बनाया जाए, ताकि प्लान को जिले के विधायकों के समक्ष भी रखा जा सके।

मिलेगा भविष्य में बेहतर फायदा

पहली बार ऐसा हो रहा है जब सांसद और विधायक के साथ तालमेल स्थापित कर अधिकारी टीम वर्क से काम कर रहे हैं। इसके बेहतर परिणाम आने वाले समय में देखने को मिलेंगे। दरअसल पांच वर्ष का विजन डाक्यूमेंट तैयार करने के पीछे लक्ष्य है कि सभी विभागों की महत्वपूर्ण योजनाओं को तैयार करने के बाद इसकी एक फाइल बनाई जाएगी। सांसद और विधायकों के नेतृत्व में यह फाइल विजन डाक्यूमेंट के नाम से मुख्यमंत्री को सौपेंगे। सूत्र बताते हैं कि मुख्यमंत्री को जिले के सांसद और विधायक विजन डॉक्यूमेंट के बारे में बताकर आगामी पांच वर्ष के लिए किए जा रहे प्रयासों को प्रस्तुतिकरण देंगे। इस प्लान के बाद अलग-अलग विभागों के लिए अलग-अलग विभाग हेतु राशि की डिमांड की जाएगी। यह राशि आम लोगों के हित में खर्च की जाकर विकास की राह सुनिश्चित की जा सकेगी।

प्लान में जनप्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका

जानकार सूत्रों ने बताया कि जिले के पांच वर्ष विजन डॉक्यूमेंट तैयार करने के पीछे सांसद और केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके समेत पांचों विधायक हेमंत खंडेलवाल, चंद्रशेखर देशमुख, डॉ योगेश पंडाग्रे, महेंद्र सिंह चौहान, गंगा बाई उइके की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। चूंकि सभी विभाग प्रमुखों को कलेक्टर ने स्पष्ट रूप से कहा कि जनप्रतिनिधियों से चर्चा कर पांच वर्ष के विजन डाक्यूमेंट में कार्यों को खासकर शामिल किया जाए। इसके बाद प्लान को अंतिम रूप दें। इस बात से साफ है कि हर विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं के लिए सांसद और पांचों विधायकों की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है। इनके अनुभव से विजन डाक्यूमेंट के प्लान को और अधिक फायदा मिल सकता है।

इनका कहना

जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक में जिले का पांच वर्ष के विजन डॉक्यूमेंट तैयार करने के लिए प्लान बनाया है। सभी अधिकारियों को प्लान बनाकर सांसद और विधायकों से चर्चा करने के लिए कहा है। जिले के विकास के लिए बनाया गया विजन विधायकों के साथ मुख्यमंत्री के समक्ष रखा जाएगा।

– नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी, कलेक्टर बैतूल

स्वास्थ्य विभाग ने निकाली तिरंगा रैली, डॉक्टर सहित कर्मचारी रहे मौजूद

बैतूल। जिला चिकित्सालय बैतूल से भी डॉक्टर सहित अन्य स्टाफ द्वारा तिरंगा रैली निकाली गई। यह तिरंगा रैली मंगलवार सुबह जिला चिकित्सालय से निकाली गई। यह रैली कारगिल चौक से होते हुए अंबेडकर चौक से होते हुए वापस जिला चिकित्सालय पहुंची। रैली में मौजूद डॉक्टर और अन्य स्टॉफ ने हाथ में तिरंगा लेकर भारत माता के जयकारे लगाए गए। भारत माता के

जयकारों से अस्पताल परिसर गूंज उठा। रैली में सीएस डॉ अशोक बारंगा, आरएमओ डॉ रूपेश पद्माकर, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ जगदीश घोरे, प्रभारी स्टूवर्ड कमलेश सातनकर, महेश, अखिलेश वैद्य, शिवम सहित अन्य नर्सिंग स्टाफ मौजूद था।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उइके द्वारा कार्यालय परिसर से तिरंगा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। रैली अम्बेडकर चौक, शिवाजी चौक, कलेक्टोरेट होते हुए लक्ष्मी चौक पहुंची, जहां पर मानव श्रृंखला बनाई गई। रैली बस स्टैंड, कारगिल चौक होते हुए वापस सीएमएचओ कार्यालय पहुंची। इधर सीएमएचओ डॉ.उईके ने बताया कि तिरंगा रैली का मुख्य उद्देश्य आजादी की 77 वीं वर्षगांठ, राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान भावना, राष्ट्र भावना, राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक, राष्ट्र निर्माण में प्रतिबद्धता दिखाना है।तिरंगा रैली में प्रभारी जिला टीकाकरण अधिकारी प्रांजल उपाध्याय, डीपीएम डॉ.विनोद शाक्य, डीपीएचएनओ श्रीमती मुधमाला शुक्ला, डीसीएम श्री कमलेश मसीह, प्रभारी परिवार कल्याण श्री भगत सिंह उइके, आरबीएसके मेनेजर श्री योगेन्द्र दवंडे, सीपीएचसी सलाहकार कु.रेजिना जेम्स, एपीएम श्री प्रकाश माकोड़े, सेक्टर सुपरवाइजर कृष्णा पाटिल सहित अधिकारी, कर्मचारी, एएनएम टीसी की छात्राएं, स्कूली विद्यार्थी, शहरी आशा कार्यकर्ता सम्मिलित रहे।

दिलों में दरार होती है, ऐसे कारणों को दूर करना होगा, अखंड भारत दिवस मनाया

बैतूल। सरस्वती स्कूल कालापाठा के पूर्व छात्रों एवं आचार्यों ने बुधवार को द्वारा अखंड भारत दिवस की स्मृति में पुण्यभूमि भारत को याद करते हुए कारगिल चौक पर दीप प्रज्वलन कर अखंड भारत का संकल्प लिया और भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारे लगाए। इस मौके पर प्राचार्य संजय उपाध्याय और शिक्षक नारायण कुंभारे ने कहा कि अखण्ड भारत महज सपना नहीं, श्रद्धा है, निष्ठा है उनके लिए जिनकी आंखों ने भारत को भूमि से अधिक माता के रूप में देखा हो। प्रकाश पाठेकर और भूपेन्द्र पंवार ने कहा कि देश में जिन

कारणों से दिलों में दरार पैदा होती है, उन कारणों को दूर करना आवश्यक है। इस अवसर पर शाला स्टाफ व पूर्व छात्र बड़ी संख्या में मौजूद थे।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में मशाल जुलूस निकाला

बैतूल। बांग्लादेश में हिंदू समुदाय के लोगों पर किए जा रहे अत्याचार के विरोध में हिंदू सेना के कार्यकर्ताओं ने मंगलवार शाम को नगर में मशाल जुलूस निकाला गया। हिंदू सेना के मध्य भारत प्रांत अध्यक्ष पवन मालवीय ने बताया कि हिंदू सेना के कार्यकर्ताओं ने मशाल जुलूस निकालकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा है।

ज्ञापन में कहा गया है कि बांग्लादेश में हिंदुओं के घरों को जलाया जा रहा है। महिलाएं प्रताड़ित की जा रही हैं। जैसे-तैसे हिंदू अपनी जान बचाकर भारत से लगी सीमा पर पहुंच रहे हैं। कट्टरपंथियों के उत्पात से हिंदू बेहद घबराए हुए हैं। भारत में बांग्लादेश से आए कई नागरिक और रोहिंग्या समुदाय मौजूद है। जिसकी सघनता से जांच की जाना अति आवश्यक है अन्यथा भविष्य में इसके भयावह परिणाम सामने आ सकते हैं। राष्ट्रीय हिंदू सेना ने मांग की है कि बांग्लादेश में फंसे हिंदुओं को भारत लाने का प्रबंध किया जाए एवं बांग्लादेश सरकार को हिंदुओं की रक्षा सुनिश्चित करने हेतु चेतावनी दी जाए। इस दौरान बड़ी संख्या में हिंदू सेना के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आधुनिक परिवेश में सुरक्षित मातृत्व व स्तनपान के महत्व पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला : गौतम अधिकारी

बैतूल। आधुनिक परिवेश में मां एवं नवजात शिशु की स्वस्थ देखभाल के लिए सुरक्षित मातृत्व एवं स्तनपान पर केंद्रित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ। महिला बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम समन्वयक गौतम अधिकारी ने बताया कि अंतरा फाउंडेशन के सहयोग से जेएच कॉलेज के ऑडिटोरियम में छात्र-छात्राओं को स्तनपान और सुरक्षित मातृत्व के महत्व के बारे अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम का संचालन सीडीपीओ बैतूल ग्रामीण नीरजा शर्मा अंतरा फाउंडेशन टीम और विश्वविद्यालय की एनएसएस समन्वयक डॉ शीतल खरे द्वारा किया गया।

स्तनपान चैंपियंस – स्तनपान के महत्व को देखते हुए आज की युवा पीढ़ी को स्तनपान के प्रति आकर्षित करने के लिए स्तनपान चैंपियंस को भी सम्मानित किया गया एवं पुरुषों के द्वारा स्तनपान को लेकर अपने सहायक दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत किया गया। पूरे सत्र में छात्रों के द्वारा पोस्टर एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में खूब बढ़-चढक़र हिस्सा लिया गया। इस पहल से स्तनपान समर्थन- हमारी जिम्मेदारी, सबकी साझेदारी को प्रदर्शित किया गया है।

(15 अगस्त पर विशेष लघुकथा)

प्रभुनाथ शुक्ल

आजादी

शहर की फ़िजा आज बदली हुई है। मौसम में नमी है जबकि आसमान में बादल छाए हुए हैं। हालांकि बारिश की कोई संभावना नहीं दिखती। लेकिन हवाएं थोड़ी तेज चल रहीं हैं। पूरा शहर तिरंगे झंडे से सजा है। चौक-चौबारों की रौनक़ बदल गई है। स्कूल-कॉलेज और सार्वजनिक स्थानों पर देशभक्ति के गीत बज रहे हैं। आयोजित समारोह से अमर शहीदों का गुणगान किया जा रहा है। मंत्री जी आज भी विपक्ष की खामियां गिनाते हुए विकास का गीत गा रहें हैं।

शहर भर में 76वां स्वाधीनता समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा है। राजनेताओं और अफसरों की गाड़ियों के बजते हूटर माहौल को बदल रहे हैं। हर जगह जिंदाबाद और अमर रहें के नारे लग रहें हैं। चारों तरफ वह गीत सुनाई दे रहा है... मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी याद करो कुर्बानी। स्कूली बच्चे प्रभात फेरियां निकाल रहें हैं। स्कूलों में भी एक वेश-भूषा में कतारबद्ध खड़े बच्चे हाथों में तिरंगा झंडा लिए

आजादी का जश्न मना रहे हैं।

शहर के करीब कचरे के पहाड़ में कुछ बच्चे बोरी में कचरा इकट्ठा कर रहे हैं। सड़क से स्कूली बच्चों की निकली प्रभात फेरी को वे बार-बार देख रहे थे। कभी कचरा बुनते कभी स्कूली बच्चों को देखते। कभी ऊंची-ऊंची इमारत पर लहराते अनगिनत तिरंगे को देखकर मुस्कुराने का प्रयास करते। वह भी इन बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहते थे। वे भी आजादी का जश्न मनाना चाहते थे। लेकिन उनके लिए आजादी क्या होती है। कोई मतलब नहीं रहा। उन्हें तो सिर्फ कूड़ा चुनने की आजादी थी।

यह क्या कुछ देर में कूड़ा चुनने वाले करीब आधे दर्जन बच्चे अपने चुने हुए कूड़े को कबाड़ी के यहां बेच कर उसी कूड़े के पहाड़ पर लौट आए थे। अब उनके हाथों में तिरंगा था और एक उन्मुक्त हंसी। तिरंगा लहराते हुए वह भारत माता की जय बोल रहे थे और आसमान नापते ऊँची इमारतों पर लहराते तिरंगे को सैल्यूट कर रहे थे। शायद वह सोच रहे थे काश! अब मैं आजाद हूँ।

कविता

लोक जिंदा है

- कमलेश कुमार दीवान

यही सम्मान है कि अपने वतन में
लोक जिंदा है
खुला आकाश है, आजाद
एक एक परिंदा है
लोक जिंदा है।
जो बर्बर थे लुट- पिट गए हैं
और मिटे कुछ तानाशाही में
बची थी राजशाही तब वहां
जन जन को अधिकार देने में
हमारा गान है, जनतंत्र सबका हो
तिरंगा एक है,मंत्र सबका हो
हिल मिल रहे,गणतंत्र सबका हो
मिटे न भाई चारा,मूलमंत्र सबका हो
बंटे क्यों जातियों में हम
लड़े क्यों साथियों से हम
ये ही संघर्ष आजादी तो हम सबकी विरासत है
मगर अब वोट की खातिर
बंटे क्यों वादियों में हम
हमें यह ज्ञान कि जेहन में हमारे
राष्ट्र के जन जन, ध्वज तिरंगा है
यही स्वाभिमान है कि वतन में
लोक जिंदा है
यही सन्मान है कि वतन में
लोक जिंदा है।

भारत रक्षा मंच ने मनाया विभाजन विभीषिका दिवस

मुख्य वक्ता ने कहा 7लाख32 हजार लोगों की आहुति ने दी थी प्राणों की आहुति

सुबह सवेरे सोहागपुर। भारत रक्षा मंच सोहागपुर के कमलेश मालवीय के नेतृत्व में रामप्रसाद वार्ड में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाया गया । भारत रक्षा मंच के कमलेश मालवीय ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में भाजपा नेता विशाल गोलानी का मार्गर्शन प्राप्त हुआ । उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली। जिसमें दो सौ सालों के अंग्रेजी शासन का अंत हुआ। स्वतंत्रता इतनी आसान नहीं थी। अनेक लोगों ने अपने प्राणों की आहूति दी थी।अधिकारित आंकड़ों अनुसार लगभग 7लाख 32 नागरिकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया था। अकेले जलियांवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 बैसाखी हत्याकांड में अंग्रेजी शासन ने स्वीकार किया था।कि 379 लोग शहीद हुए थे। लेकिन सूची 388 शहीदों की है। अपने ओजस्वी भाषण में उन्होंने कहा कि डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार 1500 लोगों एवं सिविल सर्जन डॉ स्मिथ के यह आंकड़ा 1800 लोगों का है।तब हम सहजता से अनुमान लगा सकते हैं कि आधिकारिक आंकड़े से कई गुना अधिक होने से इंकार नहीं किया जा सकता। सरदार उधम सिंह लंदन,बाजी राउत बालक, साहसी बालिका मैना, नाना साहब पेशवा 1857 क्रांति के प्रमुख केंद्र थे।

विभाजन विभीषिका

मुख्य वक्ता ने विभाजन विभीषिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें स्वतंत्रता में बलिदान लोगों का आधिकारिक आंकड़ा मिल गया लेकिन क्या हमें विभाजन विभीषिका झेलने वालों आंकड़ा प्राप्त हुआ है।यह बड़ा सवाल है। आपने अपने उद्बोधन में आरोप लगाया कि अंग्रेजों की साज़िश में देश के दो टुकड़े में बंटे। इसमें देश के सत्ता का सुख चाहने वाले नेताओं की संलिप्तता से इन्कार नहीं किया जा सकता। आपने आगे कहा कि जिस प्रकार हम 15 अगस्त 1947 की आजादी को भुला नहीं सकते उसी प्रकार हम 14 अगस्त 1947 को भी भुला नहीं सकते। आपने आरोप लगाया कि देश को दो टुकड़े कैसे कथित नेताओं ने स्वीकार किया।यह अक्षम्य है।आज एक देश पाकिस्तान के रूप में अलग खड़ा है। आपने वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज पश्चिमी पाकिस्तान एवं पूर्वी पाकिस्तान जो आज बंगला देश है। हमें दो तरफ से घेर रहे हैं।

विभाजन में कत्लेआम

आपने विभाग विभीषिका दिवस पर कहा कि इस विभाजन में करोड़ों लोग विस्थापित हुए, लाखों लोगों का कत्लेआम हुआ।यह भारत के लिए विभाजन विभीषिका से कम नहीं है। आपने अंत में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2021 में ऐलान किया था कि 14 अगस्त को देश में विभाजन विभीषिका दिवस मनाया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उद्देश्य यह है कि भारत का बच्चा-बच्चा देश के बंटवारे के दर्द को याद रखें।

अन्य वक्ता

इसके पूर्व सेवानिवृत्त फौजी राजेश रघुवंशी, पुरुषोत्तम रघुवंशी , किशन मेहरा , संजय दुबे , अशोक मेहरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर भारत यज्ञा मंच के कमलेश मालवीय, पुरुषोत्तम रघुवंशी ,राजेश रघुवंशी,किशन मेहरा, नितिन पटेल, संजय दुबे,अशोक मेहरा, रानू मालवीय, शिवकुमार पटेल, राजीव कनोजिया, रघुनंदन पुरविया, भारत मेहर, जितेंद्र पटेल, मयंक चौबे आदि उपस्थित थे ।

सामाजिक सद्भाव व अहिंसा के रास्ते पर चलने का संदेश देता है भारत : मंत्री श्री पटेल

नरसिंहपुर। शांति और अहिंसा जैसे मूल्यों को बरकरार रखने के लिए सामर्थ्य बेहद जरूरी है। भारत एक ऐसा देश है, जो सामाजिक सद्भाव, शांति व अहिंसा के रास्ते पर चलने का संदेश देता है। यह बात प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने जनपद मैदान नरसिंहपुर में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कही। कार्यक्रम में मंत्री श्री पटेल व अन्य अतिथियों ने विभाजन विभीषिका से प्रभावित परिवार के सदस्यों को शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। इन लोगों में श्री बलवंत सिंह लांबा, श्री रामदास बासवानी, सरदार श्री प्रीतम सिंह जुनेजा, श्री प्रीतम लाल, श्रीमती शीलावंती शामिल है। विभीषिका स्मृति दिवस पर मंत्री श्री पटेल ने शहीदों की स्मृतियों को नमन करते हुए कहा कि विभाजन का दर्द जिन लोगों ने एवं उनके परिवार ने झेला है, उसे बयां कर पाना बहुत मुश्किल है। हमारे पुरखों ने जिस यातनाओं को सहा है, यह सिर्फ वे ही जानते हैं। 14 अगस्त 1947 के दिन देश को बटवारे का दंश झेलना पड़ा था। इस विभाजन के दौरान हुई हिंसा में न जाने कितने लोगों ने अपने प्राण गवायें। इस दर्द को वर्तमान पीढ़ी को समझने की जरूरत है। उस दौरान जिन लोगों ने यह यातनायें झेली उनके परिजन आज हमारे बीच उपस्थित हैं। उनकी आयु उस समय कम थी, लेकिन वे इस मंजर को शायद कभी नहीं भूल सकते। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि मैं आजाद भारत में पैदा हुआ। अपने शुरूआती राजनैतिक गतिविधियों के दौरान गोटेगांव रेलवे स्टेशन से नरसिंहपुर तक हाथों में मशाल लेकर आते थे और अखंड भारत दिवस मनाया जाता था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2021 से इसे विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इस घटना के हम प्रत्यक्षदर्शी तो नहीं है, लेकिन इस दौरान जो वह उसे हमने लोगों से सुना और महसूस किया है। यह सभी बातें मेरे मित्र की माता जी ने मुझे बताई थी। हमें अपनी वर्तमान और आने वाली पीढ़ी को यह बताना होगा कि हमने किस कीमत पर आजादी पाई है। वर्तमान में पड़ोसी देश बांग्लादेश में हो रही घटनाओं से आप इसका अंदाजा लगा सकते हैं।

आजादी का महोत्सव सप्ताह में विविध कार्यक्रम

नरसिंहपुर। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस स्वामी विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय नरसिंहपुर में आजादी का महोत्सव सप्ताह दिनांक 09.08.2024 से 15.08.2024 तक मनाया जा रहा है। इस सप्ताह में निम्नानुसार आयोजन किये गये। दिनांक 09.08.2024 को नारे लेखन प्रतियोगिता जिसका विषय सर्वधर्म समभाव तृतीय दिवस में

रंगोली प्रतियोगिता जिसका विषय हर घर तिरंगा थीम में चतुर्थ दिवस में भाषण प्रतियोगिता जिसका विषय मेरे सपनों का भारत पंचम दिवस में मेंहदी प्रतियोगिता जिसका विषय अनेकता में एकता विषयों में आयाजित की गयी। इस प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के छात्र/छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लेकर सहभागिता की। छात्र/छात्राओं में कु ललिता द्विवेदी बीए तृतीय वर्ष राज ढिमोले बीए तृतीय वर्ष कमलेश कहार एमए अर्थशास्त्र बृजेश चौधरी बीए मानस गुप्ता बीएससी कनिष्काम खत्री आयुषी सिंह ने प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्तनकिया। विजेता छात्र/छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेगें। प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका में डॉ स्वाति चांदोरकर डॉ आरबी सिंह डॉ अमित ताम्रकार डॉ नमिता साहू डॉ अनिमेष पटेरिया डॉ दिलीप ग्वालिया व डॉ भावना मेहता एवं डॉ प्रीति कौरव का सराहनीय योगदान रहा। आजादी महोत्साव सप्ताह की समस्त प्रतियोगिताओं का संचालन संयोजक श्रीमती रीता रावत सह.संयाजक डॉ कीर्तिमाला सदाफल एवं सदस्यड डॉ प्रीति कौरव द्वारा किया गया।

साहब के पत्र लिखने पर भी कोई कार्रवाई नहीं...!

नर्मदापुरम। साहब का पत्र और 15 अगस्त के विज्ञापन को लेकर पत्रकारों के संदेश की होशंगाबाद विधानसभा क्षेत्र जमकर चर्चा हो रही है। साहब के लिखे का कोई महत्व नहीं..! क्योंकि पत्र लिखे 24 घंटे हो गए पर पत्र पर कार्रवाई नहीं हो पाई। कहा जा रहा आबकारी अधिकारी को साहब ने पत्र लिखा ही क्यों ..? दो साल से तो सब्जी बाजार में दारू उस पुलिस कंट्रोल रूम से 50 मीटर दूर खुले आम बिक रही जिस कंट्रोल रूम से शहर को कंट्रोल करने का दावा पुलिस करती है। अब झंडा वंदन स्थल से 100 मीटर दूर बिकेगी। 15 अगस्त के पहले साहब फार्म पर दिखाई देना चाहते हैं ऐसा क्यों..? लेकिन आबकारी अधिकारी ने भी दारु पकड़ना तो दूर उस जगह फटकना पसंद नहीं किया। लिए जाने वाले पैसे की यही ईमानदारी होती है जो दारू बिकवाने वाले से विभाग लेता है। यह सच है पर कड़वा.. अधिकारी पैसे देकर पोस्टिंग लेकर यहां आता है कलेक्टर शीलेंद्र सिंह रेत के मामले में ऐसे ही तो नहीं कहा होगा एक अकेले उन्हें हटा देना मुमकिन तो नहीं..! तो फिर किसकी मजाल संबंधित अधिकारी को कोई हटा सके। साहब पत्र लिखकर इस मामले में अनसक्सेस हो गये, हां साहब के पत्र लिखने के बाद यह खबर जरूर सामने आई कि साहब के पैतृक निवास के पास विध्यांचल यात्री शेड और सेठानी घाट पर गांजा और शराब पीने वालों की अनियंत्रित

तादाद बड़ गई। नगरीय क्षेत्र में लगभग आधा सैकड़ा स्थानों पर अवैध शराब बिक्री के केंद्र और गांजे का व्यापार करने वाले फल-फूल रहे और इधर साहब ने अचानक आबकारी अधिकारी को पत्र लिखकर चौंका दिया। इससे पहले साहब ने इटारसी गर्ल्स स्कूल के सामने के अतिक्रमण को हटाने के लिए प्रशासन को पत्र लिखकर हड़काया था। बल्कि अपने सहयोगियों के साथ खुद अतिक्रमण हटाने की बात पत्र में लिखी थी। साहब के लिखे दोनों पत्रों की तारीफ की जानी चाहिए कि साहब को गुस्सा तो आया, नहीं तो साहब की हालत इन चार दशकों में बासी कढ़ी में उबाल सा नजर आया है। आज पूरा नगर अव्यवस्थाओं की भेंट चढ़ चुका है और साहब ने जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं किया सिवाय विधानसभा में स्वार्थ के कुछ प्रश्नों के..? प्रभारी मंत्री सलामी लेने मुख्यालय आ रहें और साहब बढ़िया फीलिडंग कर रहे..? इटारसी में गर्ल्स स्कूल के सामने का तो साहब को अतिक्रमण दिखाई दे गया और मुख्यालय का नहीं ऐसा क्यों.. सवाल उठना लाजिमी है क्योंकि मुख्यालय पर गर्ल्स स्कूल के सामने अतिक्रमण में मीना बाजार लग गया। पर साहब ने यह इसे लेकर तो पत्र नहीं लिखा जबकि पूर्व में इसी मीना बाजार में बलात्कार की घटना हुई थी। फिर पूछा जा सकता है कि इटारसी में गर्ल्स स्कूल के सामने अतिक्रमण अवैधानिक और यहां का वैधानिक क्यों ..? प्रशासन पर दबाव बनाने के और भी विषय साहब के पास है उन पर खामोशी क्यों..? जहां झंडा वंदन होना है उससे 200 मीटर दूर और भाजपा कार्यालय के ठीक पीछे अवैध शराब की बोतल बिकने और खुलने की खबर पूरे नगर को है। लेकिन साहब को नहीं..? इसे लेकर तो कहा जाता है साहब की परछाई का लाभ यहां उनके समीपस्थ संगठन के लोग ही उठा रहे है। क्योंकि साहब ऐसे अवैध व्यापार को शह तो नहीं दे सकते..? उधर कलेक्टर के नाम पर कौन किस पर दबाव बना रहा इटारसी का एक संदेश खोज का विषय बन गया। पत्रकार संघ ने कलेक्टर साहब का नाम लेकर नगरपालिका द्वारा 15 अगस्त के जो विज्ञापन नहीं दिए जा रहे हैं उसकी कटु शब्दों में निंदा की है। क्योंकि कहा जा रहा है कि कलेक्टर नर्मदापुरम के द्वारा 15 अगस्त के विज्ञापन समाचार पत्रों एवं टीवी चैनल को देने के लिए मना कर दिया गया। इटारसी के पत्रकारों का इस मामले में वास्तव में जबाव नहीं। स्थानीय निकाय पर विज्ञापन का जिस तरह दबाव बनाया जा रहा उसमें सभी एक है पर मुख्यालय पर ऐसी एकता का अभाव है। यहां तो नगरपालिका विज्ञापन छपवाकर भुगतान नहीं करती और कोई चूं नहीं करता।

कविता

मातृभूमि की जय बोलो

माटी की तासीर नहीं है भय के कारण झुक जाना,
ऐसी भी तालीम नहीं है रोड़ों में ही रुक जाना ।
नहीं है पालन पोषण अपना माँ का दूध लजाने को,
स्वाभिमान को चोट लगे तो मन करता मर जाने को ।।

जिए उसूलों की खातिर उन पर ही चलते आए हैं,
मूल्यों की बलि वेदी पर ही हमने प्राण लुटाए हैं ।
आर्यावर्ती खून हमारी रक्त शिराओं में बहता है,
सर उतार लेंने दुश्मन का मन उत्साहित रहता है।।

नहीं छेड़ते बिना वजह से हम सुकून से रहते हैं,
भय भी हमसे भय खाता है जब जुनून में रहते हैं ।
कमजोर राष्ट्र को करने में सब मिलकर लगे लफंगे हैं,
नासमझो! अब भी समझो ये दुष्परिणामी पंगे हैं।।

भारत के रहने वाले सब भारतीय कहलाते हैं,
फूट डालने वालों को हम बुरी तरह लतियाते हैं।
हैं एक ताल स्वर तुक गति यति और एक ही लय,
बस! जय भारत जय भारतीय भारत माता की जय।।

अभिनंदन राष्ट्रभक्त वीरों का जन-गण मन का अर्चन,
अमर शहीदों का वंदन है शाश्वत मूल्यों का आराधन।
हर घर लगे तिरंगा प्यारा जयहिन्द राष्ट्र की जय बोलो,
राष्ट्रभक्त समवेत स्वरों में मातृभूमि की जय बोलो।।

- जयहिंद

हम भारत की संतानें हैं

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

आज धरा पर ममता समता
और प्यार की गंध चाहिए।
रक्षा करें देश के युवजन
जनगण की समृद्धि चाहिए।
सब धर्मों को जोड़ सकें
बलशाली ऐसे हस्त चाहिए।
सबको गले लगाने वाले
बापू के इस धरा धाम पर
नव प्रकाश चहुं ओर चाहिए।
भगत सिंह नेताजी जैसे
वीर बांकुरे हमें चाहिए।
खिलें पुष्प गूंजें किलकारी
भारत के आंगन में
उन्नति की हों नवल रश्मियां
उठता भारत हमें चाहिए।
मस्तक चौड़े ऊंची छाती
हमें चाहिए हमें चाहिए।
हम भारत की संतानों में
राष्ट्रप्रेम अविराम चाहिए
राष्ट्रप्रेम अविराम चाहिए।।

तिरंगा देश का प्राण है...

हाथ में लिए लहराता तिरंगा
देश की आन बान शान है
सद्भावना संचार का
सुखद तिरंगा बयार है....
जब तक तिरंगा जज्बा मन विश्वास है
शहीदों की शहादत जय जयकार है
हाथ में लिए लहराता तिरंगा

हम सबका प्राण है.....
शौर्य शांति हरियाली मात्र नहीं
कण कण तिरंगा अभिमान है
धरती मां का तिरंगा श्रृंगार है
चक्र जो तिरंगे के मध्य में है
बिंदी सुंदर मां धरा के भाल पर
देश का चमचमाता भाग्य है....
हाथ में लिए तिरंगा
हम सबका प्रबल भाग्य है
यही विधाता यही शुभ
शिराओं में बहता उज्जवल उज्ज्वल
देश का रक्त संचार है.....

- लाल बहादुर श्रीवास्तव, मंदसौर

भोपाल में जिला अधिवक्ता संघ द्वारा बांग्लादेश में हिंदुओं पर जारी अत्याचारों के विरोध में रैली कर किया प्रदर्शन

भोपाल। रैली जिला न्यायलय स्थित हनुमान मंदिर से प्रारंभ होकर शौर्य स्मारक एवं जेल रोड से होते हुए पुनः हनुमान मंदिर पर समाप्त हुई। रैली समापन के उपरांत बांग्लादेश के काल कवलित हुए हिन्दुओं के प्रति शोक सांत्वना व्यक्त करते हुए वक्ताओं के द्वारा विनम्र श्रद्धांजली अर्पित की गई। वक्ताओं द्वारा भारत सरकार से हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को रोकने और बंगलादेशी चरमपंथियों पर कठोर कार्रवाई करने की मांग की गई।

श्री रावत ने कहा की यदि भारत सरकार द्वारा बांग्लादेश का निर्माण किया गया। परंतु आज वहां निरंतर हिंदू मंदिर तोड़े जा रहे हैं। अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हमले कर उनके घर को जलाया जा रहा है, बहु बेटियों के साथ दुष्कर्म किया जा रहा है। यदि यह घटना अंतरिम सरकार नहीं रोकती है तो इस बांग्लादेश पर सीधी कार्यवाही करते हुए बांग्लादेश का भारत में विलय करे क्योंकि हिंदू समाज इस प्रकार की घटनाओं से क्षुब्द है। एनसी दास जी ने कहा की अतंराष्ट्रीय संस्थाएं मानव अधिकार के नाम पर बांग्लादेश की घटनाओं पर आंखें बंद किए हुए हैं। राजेश व्यास ने कहा की केन्द्र सरकार तत्काल इस संदर्भ में कार्यवाही करें। वहीं कैप्टन विकास पांडेय ने कहा कि इस आक्रोश प्रदर्शन मात्र से हमारे दायित्व की इति श्री नहीं हो जाती, हमको यह विषय समाज के हर वर्ग तक लेकर जाना चाहिए और संपूर्ण समाज को सजग व एकजुट कर राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना चाहिए आज बडी संख्या में जो अधिवक्ता सड़कों पर आएं हैं वह दिन दूर नहीं जब भारत का हर हिंदू इस जघन्य हत्याकांड के विरोध में सड़कों पर उतरेगा अतैव या तो बांग्लादेश के चरमपंथी सुधरें अन्यथा भारत का बहुसंख्यक वर्ग उन्हे सुधारने के लिए तत्पर है।

श्रद्धांजली सभा में पूर्व अध्यक्षों देवेन्द्र रावत, एनसी दास, स्टेटबार कौसिंल के सदस्य राजेश व्यास,शिरीष श्रीवास्तव, रवि गोयल, कैप्टन विकास पांडे, साधना पाठक, नोटरी संघ के सचिव गोपाल वाजपेयी, संतोष शर्मा, भुपेश उपाध्याय, सरिता राजानी, अनिल गिरि और ज्ञान नारायण तिवारी ने श्रद्धांजली अर्पित की। इस अवसर पर अमन गर्ग, हेम सिंह दांगी, अशोक तिवारी, कृतेश गुप्ता अशोक विश्वकर्मा, एवं राकेश तंबोली सहित समस्त सनातनी हिंदू अधिवक्ताओं ने इस घटना पर आक्रोश व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्वतंत्रता दिवस पर भोपाल में करेंगे ध्वजारोहण

विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर मुरैना में करेंगे ध्वजारोहण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस समारोह में भोपाल में ध्वजारोहण करेंगे। विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर मुरैना में ध्वजारोहण करेंगे। उप-मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा जबलपुर में, उप - मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल सागर में एवं अन्य मंत्रीगण/कलेक्टर 15 अगस्त 2024 को विभिन्न जिला मुख्यालय पर आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण कर मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन करेंगे। जनपद पंचायत मुख्यालय में जनपद अध्यक्ष और पंचायत मुख्यालय में सरपंच ध्वजारोहण करेंगे। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा इस संबंध में विस्तृत आदेश जारी किए गये हैं।

महिला को गर्म चिमटे से दागा, खाल तक खिंच आई

5 लाख रुपए नहीं लाने पर पीटा, सरकारी टीचर समेत 3 पर केस

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में एक महिला को उसी के पति ने गर्म चिमटे से दाग दिया। उसके हाथ की खाल खिंच आई है। पुलिस ने पति, सास और ससुर के खिलाफ दहेज एक्ट के तहत केस दर्ज किया है। महिला का ससुर प्राइमरी सरकारी स्कूल में टीचर है।

घटना 9 अगस्त को बहोड़ापुर थाना इलाके की है। मंगलवार को महिला ने जनसुनवाई में एसपी धर्मवीर सिंह भदौरिया से शिकायत की। एसपी ने मामले में संबंधित थाने को तुरंत कार्रवाई के लिए कहा है। पनिहार में गुना गांव की रहने वाली रेनू यादव (23) अपने भाई संजय यादव के साथ मंगलवार दोपहर एसपी ऑफिस पहुंची। यहां बताया, 'पांच साल पहले (साल 2019) में उसकी शादी बहोड़ापुर थाना क्षेत्र में रहने वाले अरविंद यादव से हुई थी। शादी के बाद से ही पति, सास, ससुर दहेज के लिए परेशान कर रहे थे। विरोध करने पर लात-घूसों से बेरहमी से पीटते थे। यह सोचकर सहती रही कि समय के साथ रिश्ता सुधरेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।'

पांच दिन पहले गर्म चिमटे से दागा

रेनू ने बताया, '9 अगस्त को ससुराल वाले मायके से 5 लाख रुपए दहेज में लाने के लिए कह रहे थे, जब विरोध किया तो पति ने उसे कमरे में बंद कर पीटना शुरू कर दिया। यही नहीं, उसके शरीर पर जलते चिमटे से शरीर पर दाग दिया। इससे हाथों की खाल तक निकल आई। मैं छोड़ने के लिए गुहार लगाती रही, लेकिन उन्हें रहम नहीं आया। किसी तरह बचकर पड़ोसी के यहां पहुंची। पड़ोसी ने भाई को फोन कर जानकारी दी।'

मकान बनाने लिया कर्ज, चुकाने के लिए मांग रहे रुपए

रेनू ने बताया 'ससुराल वालों ने मकान बनाने के लिए 5 लाख रुपए कर्ज लिया था। इसी को चुकता करने के लिए पैसों का दबाव बना रहे थे। शादी के समय पिता ने 5 लाख रुपए नकदी, सोने की चेन, गहने, बाइक समेत गृहस्थी का सामान दिया था। पति एक-दो महीने काम करता है। कमाया हुआ पैसा शराब और जुआ में उड़ा देता है। इससे पहले भी कई बार पति और ससुर मारपीट कर चुके हैं, लेकिन बदनामी के डर से चुप रही।'

भाई बोला- दो बार समझाया, पंचायत भी बिठाई

रेनू के भाई संजय यादव ने बताया कि इससे पहले दो बार बहन के ससुराल वालों को समझाया भी था। एक बार पंचायत भी बिठाई थी। अरविंद पहले फैक्ट्री में काम करता था। वर्तमान में कोई काम नहीं करता।

भारत-पाकिस्तान बंटवारे की बरसी पर सीएम यादव ने कहा-

कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के आगे घुटने टेके वही बंटवारे की वजह बनी

● 'आज के कलेक्टर अतीत काल में अंग्रेजों के लिए राजस्व जुटाते थे'

भोपाल (नप्र)। सीएम मोहन यादव ने कहा है कि देश का विभाजन 20वीं शताब्दी की सबसे दुखद घटनाओं में से एक है। इस त्रासदी का शब्दों में बखान करना करुण और कठिन है। इसकी शुरुआत बहुत पहले हो गई थी। मोहम्मद गजनबी ने सोमनाथ मंदिर नहीं तोड़ा। उसने मंदिर के साथ देश की आजादी को तोड़ने का पहला प्रयास किया था। मुख्यमंत्री ने ये बात भारत-पाकिस्तान बंटवारे की बरसी पर भोपाल के सरोजनी नायडू कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा- अंग्रेज हमारे यहां व्यापार करने के लिए आए थे। लेकिन, व्यापार के बहाने से और व्यापार की रक्षा के लिए उन्होंने सेना खड़ी की और सेना खड़ी करने के बहाने से धीरे-धीरे हमारे बंटे हुए राज्यों को किराए पर उठाने लगे। ये आज के कलेक्टर अतीत काल में उनके कलेक्शन के मेन आदमी थे जो राजस्व संग्रह का काम करते थे जिसके आधार पर वो अपना हिस्सा लेकर जाते थे। सीएम ने कहा- प्रधानमंत्री जी के मन में जो बात है उसे हम सब भी महसूस करते हैं। देश का विभाजन पिछली शताब्दी की सबसे दुखद दुर्दांत घटनाओं में से एक है। यह त्रासदी पूर्ण घटना है। इस त्रासदी का शब्दों में बखान करना बहुत ही करुण और कठिन है। कई कारणों से लोग इस पर कई बात भी नहीं करना चाहते। हम भी उसे कष्ट को जानते हैं यह बात भी सही है कि किसी देश को लंबी यात्रा करना है अगर आगे बढ़ाना है तो इतिहास की गलतियों से अगर वह सबक नहीं लेगा। तो सच मानो उसका भविष्य भी खतरे में पड़ेगा।

इजराइल को आजाद होने में दो हजार साल लगे- सीएम ने कई उदाहरण हमारी आंखों के सामने दिखाई देंगे एक देश 2000 साल पहले ऐसे ही अपने देश से अपनी भूमि से भटकने पर मजबूर हुआ उसका नाम है इजराइल....। जिसकी अपनी जमीन चली गई, जिसकी अस्मिता और राष्ट्र चला गया। उसको अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण और पुर्नस्थापना के लिए 2000 साल तक संघर्ष करना पड़ा। लेकिन देशभक्ति की आग क्या होती है और देशभक्ति क्या होती है इजराइल के लोगों को धन्यवाद देता हूं उनकी कई पीढ़ियां 2000 साल तक इस साल के लिए हर साल एक निश्चित समय पर विश्व में फैले हुए अलग-अलग देश में एक साथ उस निश्चित दिन पर इकट्ठे होते और एक दूसरे से गले मिलते और संकल्प लेते कि अगले साल हम अपने देश के अंदर मिलेंगे और

दुर्भाग्य के साथ ऐसा साल आने में 2000 साल लगे। आप अंदाजा लगा सकते हैं कितनी पीढ़ियां चली गई हमें इस उम्मीद के भरोसे की उनका अपना देश बनेगा। हमारे आसपास वो देश भी आजाद हुआ। देश की आजादी की कीमत का उदाहरण इसलिए दिया ताकि आपको इसकी गंभीरता समझ आए।

कई बार चालाक लोग भ्रम जाल में फंसा लेते हैं- सीएम ने कहा- इसराइल जैसे कोई और दो देश हैं इराक और ईरान। काल के प्रवाह में पर्शिया, ईरान के रूप में निकाल कर आया। बाद का इराक और ईरान के बीच 20 साल संघर्ष चला। दोनों के हालात क्या हो गए। लेकिन अपने देश के प्रत्यक्ष में यह बात दूसरे ढंग से बताता हूं हमारी अच्छा यह है कि हम हर एक को गले लगाते हैं हमारी अच्छाई यह है कि हम अपने उदार भाव को सबके सामने सबके साथ साझा करने जाते हैं और साझा करने के भाव में भूल जाते हैं कि हमसे कौन सी गलतियां हो रही हैं ऐसी गलतियों में कभी-कभी हमको उस उदार भावना के कारण जाने अनजाने में भ्रमित कर देते हैं। और चालाक लोग अपनी चालाकियां से हमको अपने जाल में फंसा लेते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा, देश के विभाजन के बारे में कई लोग बात भी नहीं करना चाहते। ये बात सही है कि किसी देश को लंबी यात्रा करना है और आगे अगर बढ़ाना है तो इतिहास की गलतियों से सबक लेना होगा। अगर ऐसा नहीं हुआ चो सच मानो उसका भविष्य भी खतरे में पड़ेगा।

सीएम ने कहा- 1857 का दौर आया उस दौर में क्या हिंदू, क्या मुसलमान सबने मिलकर अंग्रेजों के षड्यंत्र को का पर्दाफाश करके एक साथ युद्ध लड़ा। असावधान समाज को भी अंग्रेजों ने जैसे चाल समझ ली कि यह सब मिलकर लड़ेंगे तो हम आगे राज लंबा चला नहीं सकते। तो यह 1857 की बात है तब से उन्होंने गांठ बांध ली कि इस देश की आबादी में फूट डालो और राज करो। हिंदू-मुसलमान को आपस में लड़ाने का षड्यंत्र खड़ा किया।

1857 से 1906 तक दोनों समाज के बीच ज्यादा दूरियां नहीं थीं। लेकिन 1906 में अंग्रेजों के माध्यम से पहली बार मुस्लिम लीग का नया फार्मूला लेकर आए मुस्लिम मुस्लिम लीग के फार्मूले में नया आरक्षण खड़ा किया। पूरे भारत के अंदर ऐसी विधानसभाएं निकालीं गई जो मुस्लिम बहुल विधानसभाएं थी। मुस्लिम बहुलता वाली विधानसभाओं में उन्होंने अपना फार्मूला बनाया कि यहां पर केवल मतदान का अधिकार मुसलमान को होगा और केवल मुसलमान वोट देने जाएंगे और खड़े होने का अधिकार भी मुस्लिम को ही था। हिंदुस्तान के अंदर किसी हिंदू को वोट देने का अधिकार नहीं था।

देशभक्त मुसलमानों ने मुस्लिम लीग का साथ नहीं दिया

सीएम ने कहा- मैं अपने देश की अच्छाई बताता हूं। 1906 में पहली बार मुस्लिम लीग ने अपने कैंडिडेट खड़े किए। लेकिन देशभक्त मुसलमानों ने अंग्रेजों के उस षड्यंत्रों को समझते हुए चाहे 1906 से का चुनाव हो, 1911 का चुनाव हो, चाहे 1916 का चुनाव हो, 1923 का चुनाव हो लगातार 5 साल में एक भी बार मुस्लिम लीग के उस कट्टरपंथी भाव का साथ नहीं दिया। चुनाव में खड़े होने वाले भी मुस्लिम थे और वोट देने वाले भी मुस्लिम। लेकिन, देशभक्त मुसलमान और देश विरोधी आपस में उनका ही चुनाव होता था हर बार मुस्लिम लीग चुनाव हारती रही। 1936 तक लगातार वह हारी लेकिन दुर्भाग्य से कांग्रेस के लोगों को अपनी आजादी की लड़ाई में यह षड्यंत्र समझ में नहीं आए।

मुस्लिम लीग के आगे घुटने टेके वही बंटवारे की वजह बनी

सीएम ने कहा अरब में एक खलीफा आंदोलन हुआ उस खलीफा आंदोलन में जबरन में यहां के लोगों ने अपनी टांग फंसाते हुए उस बात को मुस्लिम धर्म से जोड़कर यहां से समर्थन वहां दिया था। जो मुस्लिम लीग की जड़ नहीं जम रही थी उसमें लियाकत अली और मोहम्मद जिन्ना यह सारे लोग उस समय कांग्रेस के बड़े नेता थे। कांग्रेस ने नादानी के आधार पर अपने देशभक्त मुसलमान का मन डबल कर दिया। जैसे ही मुस्लिम लीग के आगे घुटने टेके तो फिर कांग्रेस के अंदर के लोग भी इस लाइन पर चल पड़े जिस पर चलकर आगे जाकर देश के बंटवारे की नींव रखी गई। कार्यक्रम में विस्थापितों के परिवारों को भी आमंत्रित किया गया है।

सद्भाव में गलती कर बैठते हैं

मुख्यमंत्री ने कहा कि अपने देश के संदर्भ में ये बात दूसरे ढंग से बताता हूं। हमारे यहां अच्छा है कि हम हर एक को गले लगाते हैं। हम अपने उदार भाव को सबके सामने और साथ साझा करने जाते हैं। साझा करने के भाव में ये भूल जाते हैं कि हमसे कौन सी गलतियां हो रही हैं। ऐसी गलतियां में कभी-कभी लोग हमको उस वक्त की भावना के कारण जाने-अनजाने में भ्रमित कर देते हैं। चालाक लोग अपनी चालाकियों से हमको अपने जाल में फंसा लेते हैं।

मुरैना में रिजर्व डैम की दरार 20 फीट हुई

20 गांवों में घुस रहा पानी ; अफसर बोले-बांध खाली होने तक मरम्मत नहीं कर सकते

ग्वालियर (नप्र)। मुरैना में टोंगा गांव के लोग इस सोच में डूबे हुए हैं कि न जाने अब आगे क्या होगा? फसल तो खराब हो ही चुकी है, क्या घर भी छोड़ना पड़ेगा? कहां जाएंगे, कैसे गुजारा करेंगे?

यह दहशत यहां रिजर्व डैम के फूटने के बाद पसरी है। डैम से पानी लगातार बह रहा है। 24 घंटे पहले जो दरार 15 इंच की थी, वो बढ़कर 20 फीट हो गई है। इसकी चौड़ाई बढ़ती जा रही है। 4 गांव डूब चुके हैं, 20 गांवों में खतरा मंडरा रहा है।

12 गांवों में 400 बीघा से ज्यादा खेतों में खड़ी फसलें नष्ट हो चुकी हैं। ग्रामीणों का दावा है कि करीब 30 लाख रुपए की बाजरा की फसल खराब हुई है। विधायक सरला रावत प्रभावित लोगों से मिलने आईं और खानापूर्ति कर चली गईं। इधर, जल संसाधन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि जब तक डैम का पानी खाली नहीं हो जाता, मरम्मत नहीं कर सकते।

जितना बना, उतना सामान लेकर घर छोड़ा- मुरैना से 70 किलोमीटर दूर सबलगढ़ में लोग सड़कों या ऊंची जगहों पर बैठे और खड़े मिले। घबराहट से उनके माथों पर सिलवटें थीं, चेहरे पर बेचैनी दिख रही थी। एक महिला ने रोते हुए कहा, सोमवार रात 8 बजे घर में पानी आ गया। जितना बना, उतना सामान लेकर घर छोड़ना पड़ा। रात सड़क पर ही कटी। इसके बाद हम टोंगा रिजर्व डैम की ओर बढ़े, तो सड़क किनारे बहता पानी और इसकी गड़गड़ाती आवाज ऐसी थी कि किसी का भी दिल बैठा दे। प्रशासनिक अधिकारियों ने बताया, बांध में इतना पानी है कि दो दिन तक बहता रहेगा। इसके बाद ही टूटी दीवार की मरम्मत हो सकेगी।

सोमवार शाम 4 बजे दरार दिखी, रात 8 बजे पानी गांव में घुस आया- टोंगा गांव के लोगों का कहना है कि सोमवार शाम 4 बजे एक युवक बांध की ओर गया तो 15 इंच की दरार दिखी। तुरंत सिंचाई विभाग, जिला प्रशासन और पुलिस को सूचना दी गई। कलेक्टर अंकित अस्थाना, सिंचाई विभाग से इंजीनियर और पुलिस अधिकारियों को लेकर मौके पर पहुंचे। दरार देखी लेकिन इसे ठीक करने के प्रयास शुरू नहीं किए गए। कैचमेंट एरिया में पड़ने वाले 20 गांवों में अलर्ट जरूर कर दिया कि डैम से रिसाव हो रहा है। पानी का बहाव तेज हो सकता है। इस लापरवाही से यह हुआ कि रात 8 बजे पानी गांव में घुस आया।

राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन आज से

केंद्रीय मंत्री सिंधिया के इस्तीफे से रिक्त हुआ है पद, 21 अगस्त तक जमा होंगे नामांकन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में राज्यसभा की एक खाली सीट के लिए बुधवार से नामांकन प्रक्रिया शुरू होगी। नामांकन जमा करने की अंतिम तिथि 21 अगस्त है। 22 अगस्त को नाम निर्देशन पत्रों की स्क्रूटनी की जाएगी। 26 अगस्त तक नाम वापसी हो सकेगी। मतदान 3 सितंबर को सुबह 9 से शाम 4 बजे तक होगा। मतगणना एवं परिणाम की घोषणा भी इसी दिन की जाएगी। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि मध्यप्रदेश सहित 9 राज्यों में होने वाले राज्यसभा निर्वाचन के लिए 7 अगस्त को अधिसूचना जारी कर दी गई है। अब एमपी विधानसभा में नामांकन जमा करने की प्रक्रिया पूरी कराई जाएगी।

विधानसभा सचिव अरविन्द शर्मा बने रिटर्निंग अधिकारी, जमा कराएंगे नामांकन- राज्यसभा सदस्य चुनाव के लिए नामांकन भरे जाने को लेकर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय द्वारा नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। इसमें अरविन्द शर्मा सचिव मप्र विधानसभा को रिटर्निंग अधिकारी और भगवतदीन सिंह परस्ते अपर सचिव मप्र विधानसभा को सहायक रिटर्निंग अधिकारी बनाया गया है। नामांकन जमा करने का काम 21 अगस्त तक कार्यालयीन दिवस पर सुबह 11 से दोपहर बाद तीन बजे तक होगा।

हाईकोर्ट ने प्राइवेट स्कूलों के फीस रिफंड पर लगाई रोक

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने फीस रिफंड मामले में प्राइवेट स्कूलों को राहत दी है। कोर्ट ने फिलहाल पेरेंट्स को फीस लौटाने पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने प्रदेश सरकार और जबलपुर कलेक्टर को नोटिस दिया है। अगली सुनवाई 25 अगस्त को होगी। मामले में मंगलवार को एक्टिंग चीफ जस्टिस संजीव सचदेवा व जस्टिस विनय सराफ की डिवीजन बेंच में सुनवाई हुई। पांच प्राइवेट स्कूल- क्राइस्ट चर्च बॉयज सीनियर सेकेंडरी स्कूल, क्राइस्ट चर्च स्कूल बॉयज एंड गर्ल्स, प्रेस चर्च स्कूल घमापुर, सेंट एलॉयसिस स्कूल पोलीपाथर, सेंट लिक स्कूल सदर ने 20 जुलाई को याचिका लगाई थी। याचिकाकर्ता की ओर से एडवोकेट अंशुमान सिंह ने पैरवी की।

30 जुलाई को याचिका कर दी थी खारिज- इससे पहले, 30 जुलाई को मामले में जस्टिस मनिंदर सिंह भट्टी की कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने डिवीजन बेंच में जाने का कहते हुए याचिका निरस्त कर दी। दूसरे दिन डिवीजन बेंच में रिट पिटीशन दायर कर दी, जिसमें मंगलवार को सुनवाई हुई। जबलपुर प्रशासन ने 11 स्कूलों के खिलाफ जांच शुरू की थी। इस दौरान कई अनियमितताएं पाई गई थीं। जबलपुर प्रशासन ने 11 स्कूलों के खिलाफ जांच शुरू की थी। इस दौरान कई अनियमितताएं पाई गई थीं।

याचिकाकर्ता के वकील का कोर्ट में तर्क- याचिकाकर्ता के वकील अंशुमान सिंह ने बताया, 'मध्यप्रदेश निजी स्कूल फीस तथा संबंधित विषयों का विनियमन की धारा 5 धारा के मुताबिक प्राइवेट स्कूल 10 प्रतिशत तक फीस वृद्धि कर सकते हैं।